स्वर्ग से इंडोव किया हुआ

मन्दिर तैयारी सम्मेलन

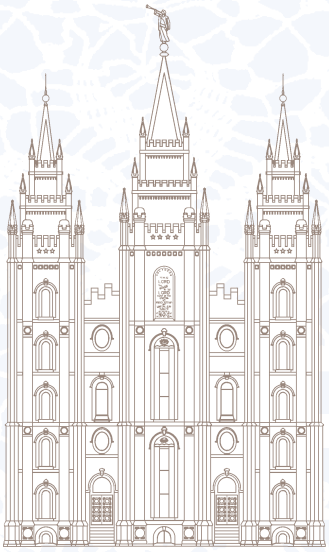

शिक्षक निर्देशिका

स्वर्ग से इंडोव किया हुआ

मन्दिर तैयारी सम्मेलन

शिक्षक निर्देशिका

अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर
सॉल्ट लेक सिटी, यूटाह

© 1995, 2003 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा
सर्वाधिकार सुरक्षित
दूसरा संस्करण २००३
भारत में छपी

अंग्रेजी अनुमति : ३/०३
अनुवाद : ३/०३
Endowed From On High: Temple Preparation Seminar का अनुवाद
Hindi

विषय-सूची

परिचय	iv
१. मन्दिर उद्धार की महान योजना के बारे में शिक्षा देता है	१
२. मन्दिर में प्रवेश करने के लिए हमें योग्य होना चाहिए	६
३. मन्दिर कार्य हमारे जीवन में महान आशीषें लाता है	१२
४. मन्दिर धर्मविधियां और अनुबंध प्राप्त करना	१६
५. प्रतीकों द्वारा प्रभु से सीखना	२१
६. पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना	२६
७. मन्दिर में जाने की आशीषों का नियमित रूप से आनन्द उठाना	३१

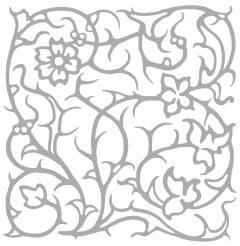

परिचय

उद्देश्य

यह निर्देशन का पाठ्यक्रम अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर के सदस्यों की मन्दिर संस्तुति प्राप्त करने और मन्दिर में जाने की तैयार करने में सहायता के लिए बनाया गया है । सदस्य जो पहले मन्दिर जा चुके हैं मन्दिर के बारे में अधिक सीखने के लिए कक्षा में जा सकते हैं ।

भाग लेने वाले

इस पाठ्यक्रम में भाग लेने वालों की मन्दिर जाने और मन्दिर संस्तुति के योग्य बनने की इच्छा होनी चाहिए । यदि उन्हें अभी तक संस्तुति प्राप्त नहीं हुई है, उन्हें उसे प्राप्त करने के लिए तैयारी करना चाहिए ।

यदि भाग लेने वालों ने रविवार विद्यालय कक्षा अभी नहीं ली है जो *सुसमाचार नियम* निर्देशिका की चर्चा करती है, उन्हें यह सुझाव दिया जाता है कि इस पाठ्यक्रम को लेने से पहले वे ऐसा करें परन्तु यह अनिवार्य नहीं है । इस पाठ्यक्रम को लेने से पहले, उन्हें मूल सुसमाचार सिद्धान्तों और नियमों की उचित समझ होनी चाहिए, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने की इच्छा होनी चाहिए, जैसे कि शुद्धता का कानून, सब्त दिन को पवित्र रखना, ज्ञान का शब्द, और दसमांश का कानून । योग्यता और व्यक्तिगत धार्मिकता को पाने का प्रयत्न मन्दिर धर्मविधियों में भाग लेने के लिए ज़रूरी है ।

धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष के निर्देशन के अधीन, वार्ड या शाखा परिषद परिवारों को मज़बूत बनाने और पुरूषों को मलकिसिदक पौरोहित्य प्राप्त करने के लिए तैयार करने के अपने प्रयासों के भाग के रूप में प्रयोग करने के तरीके की चर्चा कर सकता है ।

प्रत्येक भाग लेने वालों को वार्ड या शाखा में धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष या किसी अन्य मलकिसिदक पौरोहित्य मार्गदर्शक से कक्षा में आने के लिए एक व्यक्तिगत आमंत्रण मिलना चाहिए ।

समय और स्थान

इस पाठ्यक्रम के लिए कक्षाएं आकार में भिन्न हो सकती हैं, लेकिन उन्हें साधारण रूप से वार्ड या शाखा के स्तर पर छोटे समूहों में शिक्षा देनी चाहिए । कक्षाएं सभाघरों में या घर में दी जा सकती हैं । स्थान, समय, और निर्देशन की आवृत्ति भाग लेने वालों और शिक्षक के लिए सुविधाजनक होनी चाहिए ।

सामग्री को सात पाठों में विभाजित किया गया है । तथापि, शिक्षकों को उतना समय देना चाहिए जितना कक्षा के सदस्यों को प्रत्येक पाठ पर ज़रूरत होती है । इसमें एक पाठ की अवधि से ज्यादा समय लग सकता है ।

कक्षा सामग्रियां

कक्षा में प्रत्येक सदस्य के लिए धर्मशास्त्र उपलब्ध होने चाहिए । प्रत्येक व्यक्ति के पास पुस्तिका *पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना* (३६७९३) की एक प्रति होनी चाहिए, जो इस पाठ्यक्रम के लिए विद्यार्थी परिशिष्ट है । यह पाठों के दौरान प्रायः संदर्भ की जाती है, और पाठ के प्रस्तुत किये जाने के हफ्ते के दौरान इसे पढ़ने के लिए कक्षा के सदस्यों से कहा जाना चाहिए ।

शिक्षक

व्यक्ति या विवाहित जोड़ों को इस पाठ्यक्रम की शिक्षा देने के लिए बुलाया जा सकता है । शिक्षकों के पास सुसमाचार की मज़बूत गवाहियां होनी चाहिए और आत्मा के प्रोत्साहनों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए । वे इन्डोव सदस्य होने चाहिए जिनके पास वर्तमान मन्दिर संस्तुतियां हों और जिन्हें मन्दिर में किये जाने वाले कार्यो के महत्व और पवित्रता की समझ होनी चाहिए ।

जब संभव हो, शिक्षक भाग लेने वालों के साथ मन्दिर में जा सकता है जब भाग लेने वाले अपनी मन्दिर धर्मविधियों को प्राप्त करते हैं ।

प्रशिक्षक के लिए सुझाव

गिरजाघर के सदस्यों के मन्दिर में प्रवेश करने से पहले, वे आत्मिक रूप से तैयार होने चाहिए । इस तैयारी के भाग के रूप में, उन्हें उद्धार की योजना और मन्दिर कार्य से संबंधित सिद्धान्तों की पर्याप्त समझ होनी चाहिए । इस तैयारी में दुसरों की सहायता करने, उनके जीवन के एक अति पवित्र अनुभव की ओर मार्गदर्शन करने का आपको सौभाग्य प्राप्त है । आत्मा के प्रोत्साहनों के प्रति संवेदनशील रहें ताकि आप पाठ सामग्री को इस तरह से प्रस्तुत कर सकें जो भाग लेने वालों के लिए सर्वोत्तम हो । प्रभु की सलाह को याद रखें : विश्वास की प्रार्थना द्वारा तुम्हें आत्मा दी जाएगी, और अगर तुम आत्मा नहीं प्राप्त करते हो, तुम शिक्षा नहीं दे पाओगे'' (देखें सि. और अनु. ४२:१४) ।

प्रथम पाठ से पूर्व इस निर्देशिका को शुरू से आखिर तक पढ़ें ताकि आप समझ जाएं कि सामग्री कैसे एक साथ मेल खाती है । पहले से प्रत्येक पाठ को अच्छी तरह से तैयार करें ताकि आप विचारों को समझ पायें और उन्हें अच्छी तरह से प्रस्तुत करने में समर्थ हों । जब आप पाठों की शिक्षा देते हैं, निश्चित रहें कि भाग लेने वाले आगे बढ़ने से पहले विचारों को पूरी तरह से समझ लें । पाठ की शिक्षा देने में जल्दबाजी न करें । धैर्य रखें और भाग लेने वालों को संदेशों के द्वारा सोचने दें और उनका जवाब देने दें ।

प्रत्येक पाठ से पहले और पाठों के दौरान किसी भी समय, कक्षा के सदस्यों के लिए प्रश्न पूछने और विचारों पर चर्चा करने के अवसरों को उपलब्ध कराएं । उनकी नियमों को लागू करने में सहायता करें जो वे अपने जीवन में सीखते हैं । धर्मशास्त्रों, अन्तिम-दिनों के भविष्यवक्ताओं की शिक्षाओं, और प्रभु की आत्मा के नेतृत्व का उपयोग करते हुए प्रश्नों के उत्तर दें ।

इस पाठ्यक्रम के दौरान, मन्दिर धर्मविधियों के पवित्र चरित्र को याद रखें । जैसा कि निम्नलिखित बयान में बताया गया है, मन्दिर कार्य के कुछ पहलूओं की मन्दिर के बाहर चर्चा नहीं करते हैं ।

''हम मन्दिर धर्मविधियों की मन्दिर के बाहर चर्चा नहीं करते हैं । इसका यह इरादा बिल्कूल नहीं है कि इन मन्दिर संस्कारों का ज्ञान कुछ चुने हुओं के लिए सीमित है जो निश्चित करने के लिए बाध्य हैं कि अन्य उन्हें कभी न सीखें । वास्तव में, यह पूरी तरह से विपरित है । महान प्रयास के साथ हम प्रत्येक व्यक्ति को मन्दिर अनुभव के लिए योग्य बनने और तैयार होने के लिए उत्तेजित करते हैं ।...

''मन्दिर की धर्मविधियां और संस्कार साधारण हैं । वे सुंदर हैं । वे पवित्र हैं । उन्हें गोपनीय रखा जाता है ताकि ये उन्हें न दिया जाये जो तैयार नहीं हैं'' (*पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना,* २) ।

मन्दिर की अपनी स्वयं की गवाही को मज़बूत बनाने के लिए कार्य करें, और आपके पढ़ाये गये नियमों की सच्चाई के बारे में अपनी कक्षा को गवाही दें । जैसा उचित हो कक्षा के सदस्यों को अपनी गवाहियां देने के लिए अवसर भी उपलब्ध करायें ।

मन्दिर कार्य के परमावश्यक महत्व को हमेशा याद रखें । एल्डर बौएड के. पैकर ने कहा था : ''धर्मविधियां और अनुबंध उसकी उपस्थिति में जाने के लिए हमारे प्रत्यय पत्र बन जाते हैं । उन्हें योग्यता से प्राप्त करना जीवन भर की अभिलाषा होती है; उसके बाद उन्हें रखना नश्वरता की चुनौती है'' (Conference Report, अप्रैल १९८७, २७; या *Ensign,* मई १९८७, २४ में)।

मन्दिर उद्धार की महान योजना के बारे में शिक्षा देता है

''और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें'' (यूहन्ना १७:३) ।

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करना कि मन्दिर में उद्धार की योजना की शिक्षा दी जाती है ।

तैयारी

१. कक्षा के आरंभ होने से पहले, उद्धार की योजना को दिखा रहे एक अपूर्ण आकृति के चॉकबोर्ड या पोस्टर उदाहरण तैयार करें (देखें पृष्ठ ३) । (आप शायद प्रत्येक कक्षा के सदस्य के लिए कक्षा चर्चा के दौरान पूरा करने के लिए एक काग़ज पर अपूर्ण आकृति बनाना चाहें ।)

२. ध्यान रहे कि प्रत्येक सदस्य के लिए धर्मशास्त्रों की एक प्रति उपलब्ध हो । कक्षा के प्रत्येक सदस्य के लिए पुस्तिका *पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना* की एक प्रति भी उपलब्ध करायें । इनको भी कक्षा सामग्रियों के भाग के रूप में मंगाना चाहिए ।

३. आप शायद पाठ के दूसरे भाग में आपकी सहायता करने के लिए कक्षा के अनेक सदस्यों को नियुक्त करना चाहें । आप कक्षा के एक सदस्य को उद्धार की योजना के प्रत्येक भाग के अन्दर (पहले का जीवन, पतन, इत्यादि) जिक्र किये गये धर्मशास्त्र संदर्भों को दे सकते हैं और उससे कक्षा में संक्षिप्त करने के लिए तैयार होकर आने के लिए कहें कि ये धर्मशास्त्र उद्धार की योजना के बारे में क्या शिक्षा देते हैं ।

४. यदि फेस १ विडियो उपलब्ध है, आप शायद ''मनुष्य खुशी की तलाश में'' दिखाना चाहें, एक १३-मिनट का खण्ड ।

पाठ प्रस्तुतिकरण

मन्दिर एक आत्मिक विद्यालय है

किसी को एक आरंभिक प्रार्थना देने के लिए आमन्त्रित करें ।

समझाएं कि धर्मशास्त्र प्रत्येक पाठ में उपयोग होगा । कक्षा के सदस्यों को प्रत्येक कक्षा में धर्मशास्त्रों को लाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

कक्षा के प्रत्येक सदस्य को *पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना* की एक प्रति बांटें । समझाएं कि यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों का परिशिष्ट है । पुस्तिका से सामग्री की पूरे पाठों में चर्चा की जाएगी, और कक्षा के प्रत्येक सदस्य को पाठ्यक्रम पढ़ाये जाने के हफ्तों के दौरान पुस्तिका को पढ़ना चाहिए ।

यह बताते हुए पाठ की शुरूआत करें कि मन्दिर एक आत्मिक विद्यालय है जो जीवन के उद्देश्य और उद्धार की योजना के बारे में सीखने में हमारी सहायता करता है ।

कक्षा के सदस्य निम्नलिखित उद्धरणों को पढ़ें, जो हमें मन्दिर में सीखी जाने वाली कुछ बातों के बारे में बताते हैं :

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा था कि मन्दिर ''परमेश्वर की मधुर और पवित्र बातों का निर्देशन विद्यालय बन जाता है । यहां हमने प्रिय पिता की योजना को सारी पीढ़ी के उसके पुत्रों और पुत्रियों के बदले में रूपरेखित किया है । यहां हमारे सामने पहले के जीवन से लेकर इस जीवन से होता हुआ आगे के जीवन तक का मनुष्य के अनन्त जीवन की यात्रा के भ्रमण का नक्शा खींचा जाता है । महान मौलिक और मूल सच्चाइयां की शिक्षा स्पष्टता और साधारणता के साथ उन सभी की समझ के अनुसार अच्छी तरह से दी जाती है जो सुनते हैं'' ("The Salt Lake Temple," *Ensign,* मार्च १९९३, ५...६) ।

अध्यक्ष ब्रिग्हम यंग ने शिक्षा दी थी कि मन्दिर धर्मविधियों को इन्डोवमेन्ट कहा जाता है जो हमें अनन्त जीवन के लिए ज़रूरी निर्देशन देता है : ''आपका इन्डोवमेन्ट, प्रभु के घर में उन सारी धर्मविधियों को प्राप्त करना है, जो आपको पिता की उपस्थिति में वापस जाने में समर्थ बनाने के लिए ज़रूरी हैं, जब आप इस जीवन से विदा ले लेंगे'' (*Discourse of Brigham Young,* sel. John A. Widtsoe , ४१६) ।

कक्षा के सदस्यों को यूहन्ना १७:३ पढ़ने दें ।

• यह धर्मशास्त्र अति महत्वपूर्ण ज्ञान जो हम प्राप्त कर सकते हैं के बारे में क्या शिक्षा देता है ?

समझाएं कि मन्दिर में, हम स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के बारे में अधिक सीखते हैं, और हम उनके नज़दीक आने में समर्थ होते हैं । हम हमारे लिए उनकी योजना के बारे में सीखते हैं, जो धर्मशास्त्रों में विभिन्न विषयों द्वारा संदर्भ की जाती है, जैसे कि मुक्ति की योजना या उद्धार की योजना ।

''परमेश्वर ने कहा था कि वे हमें यह देखने के लिए सिद्ध करेंगे यदि हम उन सभी चीज़ों को करेंगे जिनकी उन्होंने हमें करने की आज्ञा दी थी'' (इब्राहिम ३:२५) ।

• आपके जीवन में अब तक उद्धार की योजना के बारे में आपकी सीखने में किसने सहायता की है ?

• उद्धार की योजना की आपकी समझ ने आपके जीवन को कैसे आशीषित किया है ?

मन्दिर में हमें उद्धार की योजना की शिक्षा दी जाती है

समझाएं कि मन्दिर इन्डोवमेन्ट के भाग के रूप में, उद्धार की योजना की शिक्षा दी जाती है । पाठ का यह भाग कक्षा के सदस्यों की मन्दिर में इन शिक्षाओं को समझने की तैयारी में सहायता करेगा ।

विचारों को समझने में कक्षा के सदस्यों की सहायता करने के लिए धर्मशास्त्रों का उपयोग करते हुए अपूर्ण चॉकबोर्ड उदाहरण को संदर्भ करें और निम्नलिखित जानकारी की समीक्षा करें । जब धर्मशास्त्रों की चर्चा की जाती है, चार्ट पर उचित पंक्तियों पर लिखें (पृष्ठ ५ पर पूर्ण चार्ट को देखें) । यदि कक्षा सदस्यों के पास चार्ट की अपने स्वयं की प्रति है, वे अपने चार्ट पर धर्मशास्त्र संदर्भों को शामिल करें ।

यदि आपने अपनी सहायता करने के लिए कक्षा सदस्यों को नियुक्त किया है, उनसे अपनी जानकारी को उद्धार की योजना पर प्रस्तुत करने को कहें । बताएं कि यह चर्चा निम्नलिखित प्रश्नों पर केन्द्रित होगी : हम कहां से आये हैं ? हम पृथ्वी पर क्यों हैं ? इस जीवन के बाद हम कहां जाएंगे ?

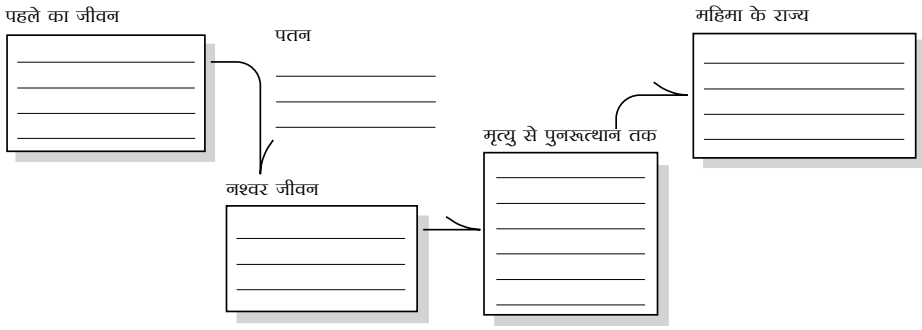

पहले का जीवन

१. हम अपने स्वर्गीय पिता, परमेश्वर के आत्मिक बच्चे हैं, और हम पृथ्वी पर आने से पहले उसके साथ रहते थे (देखें रोमियों ८:१६–१७) ।

२. स्वर्गीय पिता ने स्वर्ग में एक महान परिषद को बुलाया था (देखें इब्राहिम ३:२२—२३) । उसने हमारे अनन्त विकास और खुशियों के लिए एक योजना प्रस्तुत की थी, जिसे उद्धार की योजना कहते हैं । हमने उसकी योजना का अनुसरण करने का चयन किया था ।

३. योजना के समझौते के अनुसार, यीशु मसीह, स्वर्गीय पिता का पहिलौठा पुत्र, स्वेच्छा से हमारा उद्धारकर्ता बना था (देखें मूसा ४:२; इब्राहिम ३:२७) ।

४. लुसिफर, परमेश्वर के दूसरे पुत्र, ने स्वर्गीय पिता की योजना विरोध किया था और ''मनुष्यों की स्वत्रन्तता को नाश करने की कोशिश की थी ।'' उसे और उसके अनुयाइयों को स्वर्ग से निकाल दिया गया था और शारीरिक शरीर को प्राप्त करने और नश्वरता का अनुभव करने के सौभाग्य को छीन लिया गया था । पूरे इतिहास में, शैतान, लुसिफर के रूप में जो उसे अभी बुलाया जाता है, सारी मानवजाति को उन्हें दुष्ट बनाने के लिए प्रलोभित कर के अपनी तरह दरिद्र बनाने की कोशिश की है (देखें मूसा ४:१, ३–४; २ नफी २:१७–१८) ।

पतन

१. आदम और हव्वा स्वर्गीय पिता के पृथ्वी पर आने वाले पहले बच्चे थे और जिन्हें अदन के बाग़ में रखा गया था । उस समय, उनके शरीर नश्वर नहीं थे (देखें मूसा ३:७–८, २१–२३) ।

२. आदम और हव्वा ने उस फल को खाने का चयन किया था जो परमेश्वर ने उन्हें खाने के लिए मना किया था । परिणाम स्वरूप, उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति से अलग होना पड़ा था । इस अलगाव को आत्मिक मृत्यु कहा जाता है । वे नश्वर बन गये थे, जिसका मतलब है कि उनका शारीरिक शरीर अन्त में मृत्यु को प्राप्त होना था । उनके बच्चे हुए । नश्वर स्थिति के परिवर्तन को पतन कहते हैं (देखें २ नफी २:१९–२५; सि. और अनु. २९:४०–४१) ।

नश्वर जीवन

१. वे सभी जिन्होंने पहले के जीवन में स्वर्गीय पिता की योजना पर चलने का चुनाव किया था इस पृथ्वी पर पैदा होकर एक शारीरिक शरीर को प्राप्त करते हैं । हमारे नश्वर जीवन के

दौरान, हमारा यह जांच करने के लिए परीक्षण किया जाता है कि क्या हम विश्वास के द्वारा जीने और स्वर्गीय पिता की आज्ञाओं का पालन करने के इच्छुक हैं जब हम शारीरिक रूप से उसकी उपस्थिति में नहीं होते हैं (देखें अलमा ३४:३२; इब्राहिम ३:२४–२६) ।

२. नशवरता में, प्रत्येक व्यक्ति चुनने के लिए स्वतन्त्र है चाहे वह परमेश्वर का अनुसरण करे या शैतान का अनुसरण करे (देखें २ नफी २:२७) ।

मृत्यु और पुनरूत्थान

१. जब हम मरते हैं, हमारी आत्माएं आत्मा की दुनिया में प्रवेश करती हैं, और हमारे शरीर पृथ्वी पर ही रह जाते हैं । यह पृथकता की घड़ी उस समय तक रहती है जब तक कि हमारा पुनरूत्थान नहीं हो जाता । धार्मिक लोगों की आत्माएं शान्ति और खुशी की स्थिति में प्राप्त की जाती हैं, जिसे स्वर्गलोक कहा जाता है । दुष्ट लोगों की आत्माएं अन्धकार की स्थिति में रखी जाती हैं, जिसे कभी-कभी एक कैद के रूप में संदर्भ किया जाता है (देखें अलमा ४०:९–१४; देखें १ पतरस ३:१९ भी देखें) ।

२. यीशु मसीह का प्रायश्चित और पुनरूत्थान सारी मानवजाति के लिए पुनरूत्थारित होने के द्वारा शारीरिक मृत्यु पर विजय पाने के लिए रास्ता उपलब्ध कराता है । पुनरूत्थान का मतलब है कि हमारी आत्माएं और पूर्ण शरीर अनन्तता के लिए फिर से मिलाये जाते हैं (देखें १ कुरिन्थियों १५:२२; २ नफी ९:१०–१३; अलमा ११:४२–४४) ।

''हम विश्वास करते हैं कि मसीह के प्रायश्चित के द्वारा, सारी मानवजाति बचाई जा सकती है, सुसमाचार के कानूनों और धर्मविधियों के प्रति आज्ञा-पालन करने के द्वारा'' (विश्वास के अनुच्छेद १:३) ।

३. यीशु मसीह का प्रायश्चित हमारे लिए क्षमा पाने और पाप से शुद्ध होने का रास्ता भी उपलब्ध कराता है ताकि हम परमेश्वर की उपस्थिति में रह सकें । उद्धारकर्ता ने गतसमनी के बग़ीचे में और सूली पर सारी मानवजाति के पापों के लिए पीड़ा उठाई थी । उसके प्रायश्चित के परिणाम स्वरूप, हम अपने पापों का पश्चाताप कर सकते हैं और क्षमा पा सकते हैं । जब हम सुसमाचार जीते हैं, हम अनन्त जीवन के उपहार को पाने और उसकी तरह बनने के लिए योग्य बनते हैं (देखें मुसायाह ३:५–१२) ।

महिमा के राज्य

पुनरूत्थान के समय, प्रत्येक व्यक्ति को महिमा के एक राज्य के लिए नियुक्त किया जाएगा । वे जो धार्मिक हैं उनके मुकाबले जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं महान आनन्द और आशीषें पाएंगे (देखें १ कुरिन्थियों १५:३५, ४०–४२) ।

१. टेलेस्टियल महिमा उनके लिए है जो यीशु मसीह के सुसमाचार या यीशु की गवाही या परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं को स्वीकार नहीं करते हैं, और पापमय जीवन जीते हैं (देखें सि. और अनु. ७६:८१–८८, ९८–१०३) ।

२. टेरिस्ट्रियल महिमा पृथ्वी के उन माननीय लोगों के लिए है जिन्हें धोखा दिया जाता है और उन लोगों के लिए भी है जो यीशु मसीह की गवाही में सहासी नहीं होते हैं (देखें सि. और अनु. ७६:७१–७९) ।

३. सिलेस्टियल महिमा उन लोगों के लिए आरक्षित है जो आज्ञाओं का पालन करते हैं और धर्मविधियों को प्राप्त करते हैं, यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा सारी बातों पर विजय पाते हैं, और हृदय में शुद्ध बनते हैं (देखें सि. और अनु. ७६:५०–७०) ।

कक्षा के सदस्यों को निम्नलिखित प्रश्नों के जवाब देने के लिए कहें :

• आपने उद्धार की योजना के बारे में क्या सीखा है जो आप पहले नहीं जानते थे ?

• आपको कैसा महसूस होता है जब आप इस महान योजना में यीशु मसीह की भूमिका के बारे में सोचते हैं ?

• हम स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह को कैसे दिखा सकते हैं कि हम उनकी योजना के प्रति आभारी हैं ?

उद्धार की योजना में उद्धारकर्ता के प्रायश्चित के महत्व पर जोर देने के लिए, पूर्ण चार्ट जैसा दिखाया गया है के नीचे विश्वास का तीसरा अनुच्छेद लिखें ।

निष्कर्ष

जोर दें कि मन्दिर हमें इस योजना के बारे में ज्ञान देता है, ज्ञान जो हमारे जीवन में महान आशीषें लाता है । उन आशीषों के बारे में अपनी गवाही दें जो आपने प्राप्त की हैं क्योंकि आपने उद्धार की योजना को समझा और सुसमाचार के नियमों को जीते हैं ।

आप शायद ''मनुष्य खुशी की तलाश में'' को दिखाने के द्वारा समाप्त करना चाहें ।

किसी को समापन प्रार्थना करने के लिए आमन्त्रित करें ।

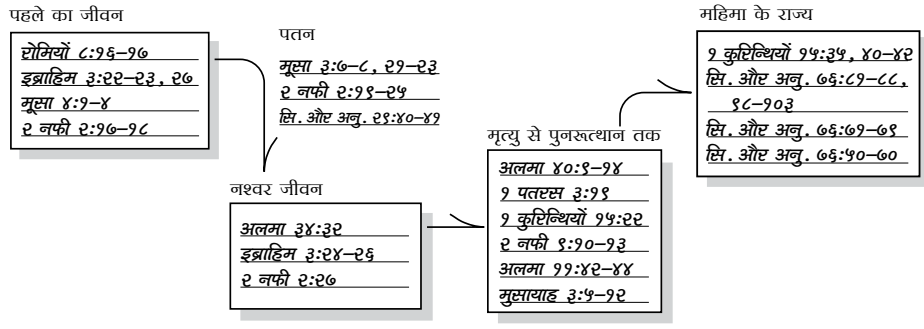

''हम विश्वास करते हैं कि मसीह के प्रायश्चित के द्वारा, सारी मानवजाति बचाई जा सकती है, सुसमाचार के कानूनों और धर्मविधियों के प्रति आज्ञा-पालन करने के द्वारा'' (विश्वास के अनुच्छेद १:३) ।

मन्दिर में प्रवेश करने के लिए हमें योग्य होना चाहिए

यह मेरे हृदय की गहरी अभिलाषा है कि गिरजाघर का प्रत्येक सदस्य मन्दिर योग्य हो । मैं आशा करूंगा कि प्रत्येक वयस्क सदस्य एक चालू मन्दिर संस्तुति के योग्य हो—और रखे'' (अध्यक्ष हार्वड डबल्यू. हन्टर) ।

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करना कि मन्दिर में प्रवेश करने के लिए उन्हें योग्य होना चाहिए ।

तैयारी

१. इस पाठ से पहले, मन्दिर संस्तुति को प्राप्त करने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्रस्तुत करने के लिए धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष को आमन्त्रित करें । इस प्रस्तुतिकरण के लिए प्रस्तावित सामग्री ''मन्दिर संस्तुति को प्राप्त करने की प्रक्रिया'' भाग में पृष्ठ १०–११ पर दी गई है । यदि धर्माध्यक्ष उपलब्ध नहीं है, आप उनके किसी सलाहकार को प्रस्तुतिकरण करने के लिए कह सकते हैं ।

२. निम्नलिखित उद्धरण को चॉकबोर्ड या एक पोस्टर पर लिखें : ''मैं गिरजाघर के सारे सदस्यों को प्रभु यीशु मसीह के जीवन और उदाहरण पर अधिक ध्यान देने के साथ जीने के लिए आमन्त्रित करता हूं'' (President Howard W. Hunter, Conference Report, अक्टू. १९९४, ७; या *Ensign,* नव. १९९४, ८ में)।

पाठ प्रस्तुतिकरण

किसी को आरंभिक प्रार्थना देने के लिए आमन्त्रित करें ।

कक्षा के सदस्यों से पूछें यदि उनका कोई प्रश्न है । अपनी योग्यता और प्रभु की आत्मा के नेतृत्व से प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ज़रूरी समय लें । याद रहे कि मन्दिर कार्य के कुछ पहलूओं की चर्चा मन्दिर के बाहर नहीं करनी चाहिए ।

समझाएं कि वे जो मन्दिर में प्रवेश करते हैं उन्हें सुसमाचार जीने और आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह में विश्वास दिखाना चाहिए । उन्हें नैतिक रूप से शुद्ध होना चाहिए, पूरा दसमांश देना चाहिए, ज्ञान के शब्द का पालन करना चाहिए, सब्त दिन को पवित्र रखना चाहिए, और अन्य सभी तरह से नेकता से जीने का प्रयास करना चाहिए । उनका धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष और स्टेक या मिशन अध्यक्ष द्वारा साक्षात्कार होना चाहिए और मन्दिर संस्तुति प्राप्त करने के लिए योग्य पाये जाना चाहिए । यह पाठ कुछ सुसमाचार नियमों और आज्ञाओं की समीक्षा करेगा जिन्हें कक्षा के सदस्यों को योग्यता से मन्दिर में जाने के उद्देश्य से जीना चाहिए ।

नैतिक शुद्धता

समझाएं कि प्रभु और उसके भविष्यवक्ताओं ने बार-बार नैतिक रूप से शुद्ध रहने के महान महत्व की शिक्षा दी है । अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने शिक्षा दी थी : ''हम विवाह से पहले

शुद्धता और विवाह के बाद पूर्ण विश्वसनीयता में विश्वास करते हैं । यही इसका सार है । यही मार्ग जीने में खुशी की ओर जाता है । यही संतुष्टि का मार्ग है । यह हृदय के लिए शान्ति और घर के लिए शान्ति लाता है'' (Conference Report, अक्टू. १९९६, ६८; या *Ensign,* नव. १९९६, ४९ म) ।

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों को एक साथ पढ़ें :

सिद्धान्त और अनुबंध ४२:२२–२४ (प्रभु ने हमें आज्ञा दी है कि हमें अपने जीवन साथी से प्रेम करना चाहिए और किसी और के पीछे नहीं भागना चाहिए; उसने हमें व्यभिचार न करने की आज्ञा दी है ।)

सिद्धान्त और अनुबंध १२१:४५ (प्रभु ने हमें आज्ञा दी है कि सदाचार को [हमारे] विचारों की निरन्तर सजावट बनने दें ।)

१ तीमुथियुस ४:१२ (हमें शुद्धता के उदाहरण बनना है ।)

१ नफी १०:२१ (कोई भी अशुद्ध वस्तु परमेश्वर के साथ नहीं रह सकती ।)

विश्वास का अनुच्छेद १:१३ (हम शुद्ध और सदाचारी होने में विश्वास रखते हैं ।)

• प्रभु नैतिक शुद्धता पर इतना जोर क्यों डालता है ?

• अनैतिकता के कौनसे कुछ परिणाम हैं जिन्हें हम दुनिया में अपने आस-पास देख सकते हैं ? नैतिक रूप से शुद्ध जीवन जीने की कौन सी कुछ आशीषें हैं ?

कक्षा के सदस्यों के ध्यान को उस उद्धरण पर केन्द्रित करें जिसे आपने चॉकबोर्ड या एक पोस्टर पर लिखा है (इस पाठ में ''तैयारी'' भाग देखें) ।

• यह सलाह कैसे हमें और हमारे बच्चों को दुनियावी प्रलोभनों से बचने और नैतिक रूप से शुद्ध जीवन जीने में सहायता कर सकती है ?

दसमांश

कक्षा के सदस्यों को सिद्धान्त और अनुबंध ११९:४ पढ़ने के लिए कहें ।

बताएं कि प्रथम अध्यक्षता ने पूरे दसमांश का निम्नलिखित व्याख्यान दिया है : ''साधारण बयान जो हम जानते हैं वह प्रभु का स्वयं का बयान है, अर्थात, कि गिरजाघर के सदस्यों को वार्षिक रूप से अपने सारे लाभ का दसवां हिस्सा देना चाहिए,' जिसका मतलब है कमाई'' (First Presidency letter, १९ मार्च १९७०)। दसमांश निधि का उपयोग सभाघरों और मन्दिर की निर्माण करने, प्रचारक कार्य को सहायता देने, और पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को बनाने के लिए किया जाता है ।

अध्यक्ष जेम्स ई. फॉस्ट द्वारा निम्नलिखित बयान बांटें :

''दसमांश एक नियम है जो दुनिया भर के अमीर और गरीब दोनों में व्यक्तिगत सुख और गिरजाघर के सदस्यों के संपन्न होने के लिए आवश्यक है, । दसमांश बलिदान का एक नियम है और स्वर्ग की खिड़कियों को खोलने की चाबी....गिरजाघर के सदस्य जो दसमांश नहीं देते हैं अपनी सदस्यता को नहीं खोते; वे सिर्फ आशीषों को खोते हैं'' (Conference Report, अक्टू. १९९८, ७३...७४; या *Ensign,* नव. १९९८, ५८...५९ में)।

कक्षा के सदस्यों के साथ निम्नलिखित धर्मशास्त्रों की समीक्षा करें :

लैव्यव्यवस्था २७:३० (दसमांश प्रभु का है; यह प्रभु के लिए पवित्र है ।)

मलाकी ३:८–११ (हम परमेश्वर को लूटते हैं जब हम अपने दसमांशों को रोक लेते हैं; परमेश्वर प्रचुरता में उन लोगों को आशीषित करेगा जो दसमांश देते हैं ।)

• कौनसी आशीषें आपने प्राप्त की हैं क्योंकि आपने दसमांश दिया है ?

• हम परमेश्वर को क्यों लूट रहे हैं जब हम अपने दसमांश को रोक लेते हैं ? (देखें सि. और अनु. १०४:१४ ।)

समझाएं कि हर साल सदस्यों को दसमांश व्यवस्था में अपने धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष से मिलकर उसे यह घोषित करने के लिए मिलने को कहा जाता है कि क्या वे पूरा दसमांश देते हैं । यह सभा सदस्यों के लिए मूल्यांकन करने के लिए एक अवसर है कि कितनी अच्छी तरह से वे इस महत्वपूर्ण आज्ञा को पूरा कर रहे हैं ।

ज्ञान का शब्द

समझाएं कि इससे पहले कि हम मन्दिर में प्रवेश कर सकें, प्रभु हमसे उन चीज़ों को न करने की आशा करता है जो हमारे जीवन को आत्मिक और शारीरिक रूप से अशुद्ध और अस्वस्थ करती हैं ।

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों के भागों या सभी को पढ़ें :

१ कुरिन्थियों ३:१६–१७ (हमारे शरीर परमेश्वर के मन्दिर हैं और इन्हें बर्बाद नहीं करना चाहिए ।)

सिद्धान्त और अनुबंध ८९ (इस प्रकटीकरण को ज्ञान के शब्द के नाम से जाना जाता है । आयतें १–९ उन वस्तुओं की चर्चा करते हैं जो हमें नहीं खानी चाहिए; आयतें १०–१७ उन वस्तुओं की चर्चा करती हैं जो हमारे शरीरों के लिए अच्छी हैं; आयतें १८–२१ प्रभु के वादों का वर्णन करती हैं जो प्रभु उनसे करता है जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं ।)

• दुनिया में आज कौनसी ऐसी वस्तुएं हैं जो हमें उन आज्ञाओं को तोड़ने के लिए प्रभावित करती हैं जो हमें ज्ञान के शब्द में दी गई हैं ?

• हम प्रभु के स्वास्थ्य के कानून को रखने में अपनी और अपने बच्चों की सहायता कैसे कर सकते हैं ?

कक्षा के सदस्यों से सिद्धान्त और अनुबंध २९:३४ पढ़ने के लिए कहें ।

• किन तरीकों से आपके विचार से ज्ञान के शब्द के प्रति आज्ञा-पालन हमें शारीरिक रूप के साथ आत्मिक रूप से भी आशीषित कर सकता है ?

• ज्ञान के कौन से कुछ बड़े खज़ाने हैं (सि. और अनु. ८९:१९) जो हम इन आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं ?

अध्यक्ष बोएड के. पैकर द्वारा निम्नलिखित बयान को बांटें :

''जो आप सीखते हैं आत्मिक रूप से, एक अंश तक उस पर निर्भर करता है, कि किस तरह से आप अपने शरीर के साथ व्यवहार करते हैं । इसलिए ज्ञान का शब्द इतना महत्वपूर्ण है ।

''आदत डालने वाले पदार्थ जिन्हें उस प्रकटीकरण द्वारा मना किया गया था—चाय, कॉफी, शराब, तम्बाकू—उसी तरह से आत्मिक संचार की नाजुक भावनाओं में विघ्न डालते हैं जिस तरह लत लगाने वाली दवाइयां डालेंगी ।

''ज्ञान के शब्द को अनदेखा न करें, क्योंकि यह आप ज्ञान के महान खज़ाने का नुकसान करवा सकती है, यहां तक उन छिपे हुए खज़ाने का जिनका उनसे वादा किया गया है जो इसे रखते हैं । और अच्छा स्वास्थ्य एक अतिरिक्त आशीष है'' (Conference Report, अक्टू. १९९४, ७८; या *Ensign,* नव. १९९४, ६१ में)।

सब्त का दिन

एक साथ निर्गमन २०:८–११ पढ़ें ।

कि प्रभु के लोगों को हमेशा से सब्त दिन को पवित्र रखने की आज्ञा दी गई है । प्रभु ने उनसे महान आशीषों का वादा किया है जो ऐसा करते हैं ।

कक्षा के सदस्यों से सिद्धान्त और अनुबंध ५९:९–१३ पढ़ने के लिए कहें ।

• सब्त दिन को पवित्र रखने के लिए प्रभु द्वारा कौन से मुख्य कारण दिये गये हैं ?

• किस तरह से सिद्धान्त और अनुबंध ५९:९–१३ सब्त के दिन के हमारे पालन का नेतृत्व कर सकता है ?

• कौन सी कुछ आशीषों का उनसे वादा किया गया है जो सही ढंग से सब्त का पालन करत हैं ?

इस चर्चा के भाग के रूप में, एल्डर जेम्स ई. फॉस्ट द्वारा सीखाये गये, निम्नलिखित नियमों को बांटें :

''परमेश्वर ने हम से सब्त दिन का सम्मान करने को क्यों कहा है ? मेरे विचार से कारण तीन तरफा हैं । पहला आराम और नयेपन के लिए शारीरिक ज़रूरत से है...

''दूसरा कारण, मेरे विचार से, अत्यन्त प्रभावशाली है । इसका लेना देना नये जन्म और हमारे आत्मिक होने के मज़बूत होने की ज़रूरत से है....

तीसरा कारण तीनों में से सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है । इसका लेना देना परमेश्वर के लिए हमारे प्रेम को व्यक्त करने के द्वारा आज्ञाओं के प्रति आज्ञा-पालन से है । आशिषित हैं वे जिन्हें उद्धारकर्ता के लिए अपने प्रेम के सिवाय उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए किसी कारण की ज़रूरत नहीं है'' (Conference Report अक्टू. १९९१, ४६...४७; या *Ensign,* नव. १९९१, ३५, में)।

• कौन सी कुछ आशीषें हैं जो आपके जीवन में आई हैं क्योंकि आपने सब्त के दिन को पवित्र रखा है ?

कक्षा के सदस्यों को आज चर्चा की गई आज्ञाओं को जीने के लिए अपने आप को वचनबद्ध करने के लिए कहें : नैतिक शुद्धता, दसमांश, ज्ञान का शब्द, और सब्त के दिन का पालन

करना । तब वे मन्दिर में जाने के लिए अच्छी तरह से तैयार होंगे और अधिक प्रचुरता से प्रभु की आशीषों को प्राप्त करेंगे ।

मन्दिर संस्तुति को प्राप्त करने की प्रक्रिया एक आशीष है

समझाएं कि सदस्यों के मन्दिर जाने से पहले, प्रत्येक को मन्दिर संस्तुति प्राप्त करने के लिए योग्य होना चाहिए । जैसा कि निम्नलिखित बयान में बताया गया है, इस संस्तुति को प्राप्त करने की प्रक्रिया प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को आशीषित कर सकती है :

धर्माध्यक्ष की हमारी व्यक्तिगत योग्यता के बारे में प्रश्न पूछने की जिम्मेदारी होती है । यह साक्षात्कार आपके लिए गिरजाघर के एक सदस्य के रूप में बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह ही अवसर होता है प्रभु के नियुक्त सेवक से अपने जीवन के नमूने को बताने का । यदि आपके जीवन में कोई बात अनुचित है, धर्माध्यक्ष इसका समाधान करने में आपकी सहायता कर पाएगा । इस प्रक्रिया के द्वारा, जब आप इस्राएल में समान न्यायाधीश के साथ सलाह करते हैं, आप प्रभु की अनुमति के साथ मन्दिर में प्रवेश करने के लिए अपनी योग्यता को घोषित कर सकते हैं अथवा इसे स्थापित करने में आपकी सहायता की जा सकती है'' (*पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना,* ३) ।

''मैं....गिरजाघर के सदस्यों को अपनी सदस्यता के महान चिन्ह और अपने अति पवित्र अनुबंधों के लिए दिव्य योजना के रूप में प्रभु के मन्दिर को स्थापित करने के लिए आमन्त्रित करता हूँ'' (अध्यक्ष हार्वड डबल्यू. हन्टर) ।

समझाएं कि धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष और स्टेक या मिशन अध्यक्ष उन सभी का साक्षात्कार करते हैं जो पहली बार मन्दिर संस्तुति को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है और जो मन्दिर में विवाह करने की योजना कर रहे हैं । धर्माध्यक्ष और स्टेक अध्यक्षता में सलाहकार उनका साक्षात्कार कर सकते हैं जो अपने मन्दिर संस्तुतियों को नया करवाना चाहते हैं ।

इस समय, धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष या धर्माध्यक्षता में एक सलाहकार मन्दिर संस्तुति के बारे में अपनी प्रस्तुतिकरण प्रस्तुत करे । उसे वास्तव में समूह में साक्षात्कार के प्रश्नों को नहीं पढ़ना चाहिए, लेकिन वह कक्षा के सदस्य क्या अपेक्षा कर सकते हैं जब उनका मन्दिर संस्तुति के लिए साक्षात्कार होता है के बारे में विचार प्रस्तुत कर सकता है । निम्नलिखित बयान एक नेतृत्व के रूप में उपयोग किये जा सकते हैं :

सदस्य जो मन्दिर संस्तुति चाहते हैं उनके पास स्वर्गीय पिता की, प्रभु यीशु मसीह की, और पवित्र आत्मा की गवाही होनी चाहिए । उन्हें प्रभु के भविष्यवक्ता, अन्य जनरल अधिकारियों, और अपने स्थानीय मार्गदर्शकों को समर्थन करना चाहिए । उन्हें उन समूहों या व्यक्तियों के साथ सहानुभूति प्रकट नहीं करनी चाहिए और उनसे संबंध नहीं रखना चाहिए जिन्होंने गिरजाघर के सिद्धान्तों को त्याग दिया है या जिनकी शिक्षायें अथवा कार्य सुसमाचार के विपरित हों ।

वे जो संस्तुति चाहते हैं उन्हें निष्ठा से प्रभुभोज सभाओं, पौरोहित्य सभाओं, और अन्य गिरजाघर सभाओं में उपस्थित होना चाहिए । उन्हें शुद्ध अन्तःकरण से अपनी बुलाहटों को पूरा करना चाहिए जो उन्हें पौरोहित्य अधिकार द्वारा मिली हैं । उन्हें पूरा दसमांश देने, शब्द और कार्य में ईमानदार होने, और चाय, कॉफी, शराब, तम्बाकू, और अन्य हानिकारक और आदत-डालने वाले पदार्थों से दूर रहने सहित, प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने का प्रयास करना चाहिए ।

वे शुद्ध और सदाचारी जीवन जी रहे होने चाहिए और शुद्धता के कानून का पालन कर रहे होने चाहिए, जो सिवाय पति-पत्नी के जिनके साथ उनका कानूनी तौर में विवाह हुआ है किसी अन्य के साथ यौन संबंध को मना करता है । वे अपने परिवारों के अन्य सदस्यों के साथ दोनों आत्मिक और शारीरिक संबंध में सुसमाचार नियमों के अनुसार जी रहे होने चाहिए । उन्हें किसी अन्य के आत्मिक, शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक अनुचित व्यवहार में शामिल नहीं होना चाहिए ।

वे अपने पापों को स्वीकार करने और उन्हें हटाने के लिए इच्छुक होने चाहिए । गंभीर पाप, जैसे कि नैतिक उल्लंघन, परिवार के सदस्यों को गाली देना, धर्मत्यागी समूहों अथवा कार्यों से संबंध, या देश के कानूनों का गंभीर उल्लंघन, मन्दिर-संस्तुति साक्षात्कार के पहले धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष के सामने स्वीकार करना चाहिए । यदि एक व्यक्ति का विवेक, जो कि मसीह का प्रकाश है जिसे सारे लोगों को दिया गया है, दिमाग में यह सवाल आता है कि धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष के साथ कुछ बातें बांटी जानी चाहिए, इसकी शायद चर्चा की जानी चाहिए ।

वे जिनका तलाक हो चुका है उन्हें मन्दिर संस्तुति प्राप्त करने से पहले धर्माध्यक्ष या शाखा अध्यक्ष और स्टेक या मिशन अध्यक्ष से अनुमति लेने की आवश्यकता है । उन्हे समय पर आर्थिक सहायता करने सहित, हमेशा समझौते के अनुसार कार्य करना चाहिए ।

सदस्य जिन्हें मन्दिर संस्तुति की ज़रूरत है उनका धर्माध्यक्षता के सदस्य द्वारा या शाखा अध्यक्ष द्वारा साक्षात्कार होने के बाद स्टेक अध्यक्षता के सदस्य द्वारा या मिशन अध्यक्ष द्वारा साक्षात्कार होना चाहिए । कुछ शायद सोचे कि इसकी क्यों ज़रूरत है । जब हम एक मन्दिर संस्तुति लेने का प्रयास करते हैं, हम वास्तव में मन्दिर में जाने के लिए प्रभु से अनुमति लेने का प्रयास करते हैं । हमारे पास दो साक्षियों के सामने जो प्रभु के अधिकृत सेवक हैं अपनी योग्यता को साबित करने का सौभाग्य होता है । पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए प्रभु के सेवकों के सामने अपनी योग्यता को निश्चित करने की यह हमारे लिए आशीष है ।

निष्कर्ष

मन्दिर में जाने और एक वर्तमान मन्दिर संस्तुति हमेशा रखने के लिए योग्य होने के महत्व पर जोर देने के लिए, अध्यक्ष हावर्ड डबल्यू. हन्टर द्वारा निम्नलिखित बयान की समीक्षा करें :

''मैं....गिरजाघर के सदस्यों को अपनी सदस्यता के महान चिन्ह और अपने अति पवित्र अनुबंधों के लिए दिव्य योजना के रूप में प्रभु के मन्दिर को स्थापित करने के लिए आमन्त्रित करता हूँ । यह मेरे हृदय की गहरी अभिलाषा है कि गिरजाघर का प्रत्येक सदस्य मन्दिर योग्य हो । मैं आशा करूंगा कि प्रत्येक वयस्क सदस्य एक वर्तमान मन्दिर संस्तुति के योग्य हो—और रखे, यद्यपि यदि मन्दिर के लिए समीपता इसके तुरन्त अथवा नित्य उपयोग की अनुमति न दे'' (quoted in Jay M. Todd, "President Howard W. Hunter," *Ensign,* जुलाई, १९९४, ५)।

उन आशीषों की गवाही दें जो आपके जीवन में आई हैं जब आपने मन्दिर में जाने के लिए योग्यता से जीया ।

किसी को समापन प्रार्थना देने के लिए अमन्त्रित करें ।

मन्दिर कार्य हमारे जीवन में महान आशीषें लाता है

''जोसफ स्मिथ ने प्रार्थना की थी कि परमेश्वर के सेवक मन्दिर से परमेश्वर की शक्ति के साथ सशस्त्र, अपने ऊपर उसके नाम को लेकर, और अपने आस-पास उसकी महिमा के साथ जायें'' (देखें सि. और अनु. १०९:२२) ।

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करना कि वे जो योग्य रूप से मन्दिर में जाते हैं प्रभु से महान आशीषें प्राप्त करेंगे ।

तैयारी

१. इस पाठ में उपयोग किये गये धर्मशास्त्रों की ध्यान से समीक्षा करें ताकि आप उनके बारे में कक्षा चर्चा का नेतृत्व करने के लिए तैयार रहेंगे ।

२. आप शायद कक्षा के सदस्यों को मन्दिर कार्य के बारे में या सच्चाई के अनन्त स्वभाव के बारे में एक स्तुति गीत गाने के लिए चाहें ।

३. यदि पारिवारिक घरेलू संध्या विडियों परिशिष्ट (अर्न्तराष्ट्रीय) ५X७३६ उपलब्ध है, आप शायद दिखाना चाहें ''मन्दिर अनन्त अनुबंधों के लिए हैं,'' छः मिनट का प्रसारण ।

पाठ प्रस्तुतिकरण

किसी को एक आरंभिक प्रार्थना देने के लिए आमन्त्रित करें ।

कक्षा के सदस्यों से पूछें यदि उनका कोई प्रश्न है । अपनी योग्यता और प्रभु की आत्मा द्वारा नेतृत्व से प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ज़रूरी समय लें । याद रहे कि मन्दिर कार्य के कुछ पहलूओं की चर्चा मन्दिर के बाहर नहीं करनी चाहिए ।

मन्दिर कार्य पूर्वजों के समय से चला आ रहा है

आप शायद मन्दिर कार्य के बारे में या सच्चाई के अनन्त स्वभाव के बारे में एक साथ एक स्तुति गीत गाकर शुरू करना चाहें ।

बताएं कि प्रभु ने हमेशा से अपने लोगों को मन्दिर का निर्माण करने की आज्ञा दी है । उसने मन्दिरों में किये जाने वाले कार्य को प्रकट किया है ।

• कौन से मन्दिरों या मंडपों का जिक्र धर्मशास्त्रों में किया गया है ?

कक्षा के सदस्यों को मन्दिरों और मंडपों से जुड़े संदर्भों को ढूंढने के लिए धर्मशास्त्र विषय-सूचियों की समीक्षा करने के लिए आमन्त्रित करें । आप शायद कक्षा के सदस्यों के उत्तरों को चॉकबोर्ड पर लिखना चाहें । आप शायद यह भी चाहें कि कक्षा के सदस्य निम्नलिखित धर्मशास्त्रों की समीक्षा करें :

मूसा का मंडप : निर्गमन ४०:१–२, ३४–३८

सुलेमान का मन्दिर : २ इतिहास ३:१–२; ५:१

हेरोदेस का मन्दिर : मत्ती २१:१२–१५

नफायटी मन्दिर : २ नफी ५:१६; मुसायाह १:१८; ३ नफी ११:१

समझाएं कि धर्मत्याग के कारण, इन सभी मन्दिरों ने वास्तविक रूप से अपने सच्चे उद्देश्य को खो दिया था और नाश हो गये थे । मन्दिर अपनी पूर्णता में हमारे दिन में भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ द्वारा पुनःस्थापित किया गया है, हमारे जीवनों में महान आशीषों को लाते हुए ।

एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने कहा था : ''प्रेरित निर्माण और मन्दिरों का उचित उपयोग प्रभु के कार्य की पवित्रता का महान प्रमाण है...वहां जहां मन्दिर होते हैं, उनके ऊपर प्रकटीकरण की आत्मा के होने के साथ जो उसमें कार्य करते हैं, वहां प्रभु के लोग पाये जाते हैं; जहां ये नहीं होते गिरजाघर और राज्य और स्वर्ग की सच्चाई नहीं होती'' (*Mormon Doctrine*, दूसरा संस्करण, ७८१)।

वे जो योग्य रूप से मन्दिर में जाते हैं उन्हें महान आशीषों का वादा किया जाता है

मन्दिर, या प्रभु का घर, वह स्थान है जहां हम सिलेस्टियल राज्य में उत्कर्ष के लिए तैयार होने के लिए जाते हैं । वहां हम स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के बारे में अधिक सीखते हैं । हम उनके साथ अनुबंध करते हैं, और वे हमारे साथ अद्भुत आशीषों का वादा करते हैं ।

सिद्धान्त और अनुबंध में, प्रभु ने उन कुछ आशीषों की वर्णन किया है जो उनके पास आती हैं जो मन्दिर में जाते हैं और वहां बनाएं गये अनुबंधों को योग्य जीते हैं । इनमें से कुछ आशीषों की व्याख्या भाग १०९ में की गई है, जो कर्टलैंड मन्दिर के समर्पण पर की गई प्रार्थना है । इस प्रार्थना के शब्द प्रकटीकरण द्वारा जोसफ स्मिथ को दिये गये थे ।

अध्यक्ष हार्वड डबल्यू. हन्टर ने कहा था कि ''प्रभु द्वारा उसके पवित्र मन्दिर में उपयोग करने के लिए दी गई पौरोहित्य शक्ति के कारण इस प्रार्थना में दी गई आशीषें आज भी हमें व्यक्तिगत रूप में, परिवारों के रूप में, और एक लोगों के रूप में मिल रही हैं'' ("The Great Symbol of Our Membership," *Ensign,* अक्टू. १९९४, ४)।

अध्यक्ष हन्टर ने फिर भाग १०९ से कुछ आयतों को उद्धरित किया था । कक्षा के सदस्यों से इन आयतों को पढ़ने के लिए कहें : सिद्धान्त और अनुबंध १०९:१०–१२, २२–२३, ५९, ६७, ७२, ७५ । उन्हें प्रभु द्वारा जिक्र की गई आशीषों को देखने के लिए कहें ।

पढ़ने के बाद, कक्षा के सदस्यों को आशीषों को लिखने के लिए कहें जो उन्होंने पहचानी है । चॉकबोर्ड पर टिप्पणियों को लिखें । आशीषें जिनका जिक्र किया गया है में निम्नलिखित शामिल हो सकता है :

१. प्रभु की महिमा उसके लोगों पर होगी ।

२. प्रभु के सेवक मन्दिर से प्रभु की शक्ति, नाम, और महिमा के साथ बाहर आएंगे, और दूत उनकी देखरेख करेंगे ।

३. प्रभु के सेवक मन्दिर से सुसमाचार की सच्चाई को पृथ्वी के कोने कोने तक ले जाएंगे ।

४. स्टेक का संगठन किया जाएगा ताकि प्रभु के लोग इकट्ठा हो सकें ।

५. सारे बिखरे हुए इस्राएल सच्चाई को सीखेंगे और आनन्द मनाएंगे ।

६. सन्तों के परिवार और उनके सभी बीमार और पीड़ित जनों को प्रभु के सामने याद रखा जाएगा ।

७. प्रभु का राज्य पूरी पृथ्वी पर फैल जाएगा ।

८. प्रभु के सेवक किसी दिन प्रभु से मिलाए जाएंगे और हमेशा के लिए उसके साथ रहेंगे ।

''उसकी उपस्थिति [उसके घर में] होगी, क्योंकि वह इसके अन्दर आएगा, और सारे जो हृदय में शुद्ध हैं इसमें आएंगे और परमेश्वर को देखेंगे'' (देखें सि. और अनु. ९७:१६) ।

• आपको कैसा महसूस होता है जब आप उन को वादा की गई अद्‌भुत आशीषों के बारे में विचार करते हैं जो मन्दिर में योग्य रूप से जाते हैं और अपने अनुबंधों का सम्मान करते हैं ?

अध्यक्ष हार्वड डबल्यू. हन्टर ने कहा था : ''क्या कभी इस प्रकार के प्रेरित और अद्‌भुत वादों के साथ लोग रहे हैं ! आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि प्रभु इच्छा करता है कि उसके अनुयाई अपनेआप को उसके उदाहरण की ओर और उसके मन्दिरों की ओर ले जायें'' (*Ensign,* अक्टू. १९९४, ५) ।

प्रभु ने सिद्धान्त और अनुबंध ९७ में मन्दिर से जुड़े वादों को किया था । कक्षा के सदस्यों से सिद्धान्त और अनुबंध ९७:१५–२१ को पढ़ने के लिए कहें ।

• आयतें १५–१७ लोगों को प्रभु की आशीषों को उसके मन्दिरों में पाने के लिए योग्य बनने के लिए प्रभु के लोगों को क्या करना चाहिए के बारे में क्या शिक्षा देते हैं ? (हृदय में शुद्ध बने रहें और मन्दिर के अन्दर कोई अशुद्ध चीज़ नहीं आये ।)

समझाएं कि वे जो हृदय में शुद्ध होते हैं सियोन कहलाते हैं । आयतें १५–२१ शिक्षा देते हैं कि मन्दिर में योग्य रूप से जाने और हृदय में शुद्ध होने का प्रयास करने और बुराई से बेदाग़ होने के द्वारा हम सियोन बनाने में सहायता कर सकते हैं ।

• उन लोगों के लिए जो सियोन कहलाने के योग्य हैं कौन सी आशीषों का वादा किया गया है ?

समझाएं कि एक सियोन नाम का नगर पुराने समय में था । इस नगर को हनोक और उसके लोगों द्वारा बनाया गया था । इसे इसके लोगों की धार्मिकता के कारण स्वर्ग में ले लिया गया था (देखें सि. और अनु. ३८:४; मूसा ७:१८–२१, ६९) ।

सियोन अन्तिम दिनों में भी होगा । विश्वास के दसवें अनुच्छेद में, प्रभु ने वादा किया था कि सियोन नाम का एक नगर अमेरिका महाद्वीप पर बनाया जाएगा । कक्षा के सदस्यों को इस विश्वास के अनुच्छेद को पढ़ने के लिए कहें । बताएं कि इस्राएल के बिखरे हुए लोग इस महान नगर में एकत्रित होंगे (देखें सि. और अनु. १०३:११–१३) ।

आज, गिरजाघर के सदस्यों को पवित्र मन्दिर में जाने और जहां कहीं दुनिया में वे रह रहे हैं वहां सियोन बनाने के योग्य होने की सलाह दी जाती है । हमें अपने घरों को मन्दिरों के समान—शुद्धता, प्रेम, और व्यक्तिगत प्रकटीकरण का स्थान बनाना चाहिए ।

• हम हृदय में अधिक शुद्ध बनने के लिए क्या कर सकते हैं ?

• किन तरीकों में दुनिया कभी-कभी हृदय में शुद्ध रहना मुश्किल बनाती है ?

• किन तरीकों में आप अपने परिवार, शाखा, या वार्ड को हृदय में शुद्ध बनने के लिए सहायता कर सकते हैं ?

समझाएं कि वे जो मन्दिर अनुबंधों को बनाते हैं और उन्हें रखते हैं और अपने पूरे जीवन भर हृदय में शुद्ध बनने के लिए प्रयास करते हैं वे लोग होते हैं जो सियोन बनाने में सहायता कर सकते हैं ।

निष्कर्ष

गवाही दें कि वे जो योग्य रूप से मन्दिर में जाते हैं सियोन लोग होने की आशीषों समेत, प्रभु से महान आशीषों को प्राप्त करेंगे । इन आशीषों के योग्य बनने के लिए और हृदय में शुद्ध बनने के लिए सब कुछ करना चाहिए जो हम कर सकते हैं ।

आप शायद विडियो प्रस्तुतिकरण ''मन्दिर अनन्त अनुबंधों के लिए हैं'' दिखाना चाहें ।

किसी को समापन प्रार्थना देने के लिए अमन्त्रित करें ।

४

मन्दिर धर्मविधियां और अनुबंध प्राप्त करना

''हम अनुबंधित लोग हैं । हम पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के लाभ के लिए—समय और पैसे और हुनर धन—जो हम हैं और जो कुछ हमारे पास है —उसे देने का अनुबंध करते हैं'' (पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना, ३५) ।

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की मन्दिर धर्मविधियों और अनुबंधों के महत्व को समझने में सहायता करना ।

तैयारी

यदि यह आपके क्षेत्र में उपलब्ध है, आप शायद विडियो प्रस्तुतिकरण दिखाना चाहें *Together Forever* (53411) । प्रस्तुतिकरण लगभग २७ मिनट का है ।

पाठ प्रस्तुतिकरण

किसी को आरंभिक प्रार्थना देने के लिए आमन्त्रित करें ।

कक्षा के सदस्यों से पूछें यदि उनका कोई प्रश्न है । अपनी योग्यता और प्रभु की आत्मा द्वारा नेतृत्व से प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ज़रूरी समय लें । याद रहे कि मन्दिर कार्य के कुछ पहलूओं की चर्चा मन्दिर के बाहर नहीं करनी चाहिए ।

मन्दिर में हम धर्मविधियां प्राप्त करते हैं और अनुबंधों को बनाते हैं

समझाएं कि मन्दिर में हम धर्मविधियों को प्राप्त करते हैं जो हमें परमेश्वर की उपस्थिति में वापस जाने में समर्थ बनाएंगी । हम सुसमाचार के कानूनों को जीने के लिए अनुबंधों को भी बनाते हैं । निम्नलिखित सामग्री सामान्य रूप से धर्मविधियों और अनुबंधों, और विशेष रूप स मन्दिर धर्मविधियों और अनुबंधों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराएगी ।

धर्मविधियां

समझाएं कि धर्मविधि एक पवित्र संस्कार है जिसका आत्मिक अर्थ और प्रभाव है ।

कक्षा के सदस्यों से गिरजाघर में कुछ धर्मविधियों के नाम बताने के लिए कहें । (वे शायद जिक्र करें शिशुओं को नामकरण और आशीर्वाद, बपतिस्मा, पुष्टिकरण, प्रभुभोज, पौरोहित्य के लिए नियुक्त करना, और मन्दिर धर्मविधियां ।)

समझाएं कि पौरोहित्य की शक्ति द्वारा संपन्न की गई धर्मविधियां हमारे उत्कर्ष के लिए ज़रूरी हैं । यह इन धर्मविधियों के द्वारा है कि हम अपने जीवन में परमेश्वर की शक्ति को प्राप्त करते हैं ।

कक्षा के सदस्यों को सिद्धान्त और अनुबंध ८४:१९–२१ पढ़ने के लिए कहें ।

• ईश्वरीय शक्ति हमारे जीवन में प्रकट होने के उद्देश्य में क्या ज़रूरी है ? (मलकिसिदक पौरोहित्य की धर्मविधियां । ''महान पौरोहित्य'' जिसका जिक्र इन आयतों में किया गया था मलकिसिदक पौरोहित्य है ।)

''पौरोहित्य की धर्मविधियों और पौरोहित्य के अधिकार के बिना, ईश्वरीय शक्ति नश्वरता में मनुष्यों पर प्रकट नहीं की जाती है'' (देखें सि. और अनु. ८४:२१) ।

कक्षा के सदस्य *पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना* में पृष्ठ २९ पलटें । कक्षा के एक सदस्य को निम्नलिखित बयान को जोर से पढ़ने के लिए कहें :

''गिरजाघर के सदस्य होने के नाते धर्मविधियां हमारे लिए कैसे महत्वपूर्ण हैं ?

''उनके बिना क्या आप खुश रह सकते हैं, क्या आप मुक्ति पा सकते हैं, क्या आप उत्कर्ष पा सकते हैं ? उत्तर : वे चाहत से अधिक बढ़कर हैं, अथवा आवश्यकता से भी अधिक बढ़कर । अत्यावश्यक अथवा परमावश्यक से अधिक बढ़कर । वे हम में से प्रत्येक के लिए निर्णायक होते हैं ।

अनुबंध

जोर दें कि अनुबंध परमेश्वर और व्यक्ति या लोगों के समूह के बीच में एक पवित्र वाचा है । परमेश्वर निश्चित शर्तें रखता है, और वह हमें आशीष देने का वादा करता है जब हम उन शर्तों का पालन करते हैं । जब हम अनुबंधों को न रखने का चयन करते हैं, हम आशीषें नहीं पा सकते, और कुछ उदाहरणों में हम हमारे अवज्ञा के परिणाम स्वरूप में दण्ड पाते हैं । पौरोहित्य की बचाने वाली धर्मविधियों के साथ हमेशा अनुबंध होते हैं ।

• अपने जीवन में अब तक कौनसे अनुबंधों को आपने प्रभु के साथ बनाया है ? (कक्षा के सदस्य शायद जिक्र करें बपतिस्मा का अनुबंध, जो हर समय हमारे प्रभुभोज लेते वक्त नया किया जाता है ।)

• कौन से अनुबंध हम अपने बपतिस्मे के समय बनाते हैं ? (देखें मुसायाह १८:८–१०; सि. और अनु. २०:३७ ।)

जोर दें कि जब हम परमेश्वर के साथ अनुबंधों को बनाते हैं, हम परमेश्वर की सेवा करने की अपनी इच्छा और जो हम से कहा जाता है उन सबका पालन करने की हमारी अभिलाषा को व्यक्त करते हैं । बदले में, परमेश्वर हम से अद्‌भुत आशीषों का वादा करता है । अनन्त जीवन की ओर प्रगति करने के उद्देश्य से हमें अनुबंधों को बनाना और रखना चाहिए ।

मन्दिर धर्मविधियां और अनुबंध

समझाएं कि मन्दिर धर्मविधियों में जीवित और मृत दोनों के लिए इन्डोवमेन्ट और मुहरबंदी (मन्दिर विवाह और माता-पिता का बच्चों के साथ मुहंरबंद होना) शामिल है । मृतकों के लिए बपतिस्मे की धर्मविधि मन्दिर में संपन्न की जाती है, जैसे कि अन्य पौरोहित्य धर्मविधियां की जाती हैं । मन्दिर धर्मविधियों में, हम अपनेआप को परमेश्वर को देने के लिए और पृथ्वी पर उसके राज्य को बनाने में सहायता करने के लिए गंभीर अनुबंध बनाते हैं ।

एल्डर जेम्स ई. टालमेज़ ने अनुबंध जो हम इन्डोवमेन्ट में बनाते हैं के बारे में कहा था :

''इन्डोवमेन्ट की धर्मविधियां व्यक्ति के निश्चित कर्तव्यों वाले भाग का प्रतिनिधित्व करती हैं, कड़ी नैतिकता और शुद्धता के कानून, दानशील, परोपकारी, सहनशील और शुद्ध बनने का पालन करने के लिए; प्रतिभाएं और पैसे दोनों सच्चाई को फैलाने और मानवजाति को बढ़ाने

में समर्पित करने के लिए; सच्चाई के कारण भक्ति को बनाये रखने के लिए; हर तरह से महान तैयारी में योगदान करने के लिए तरीकों को ढूंढने के लिए इस प्रकार के अनुबंध और वादें हैं ताकि पृथ्वी अपने राजा–प्रभु यीशु मसीह को प्राप्त करने के लिए तैयार रहे । प्रत्येक अनुबंध बनाने और प्रत्येक कर्तव्य को लेने के साथ शर्तों के विश्वसनीयता से पालन करने के ऊपर निर्भर, एक वादा की गई आशीष दी जाती है'' (*The House of the Lord,* संशोधित संस्करण, ८४)।

आप शायद अभी व्याख्या किये गये अनुबंधों की चॉकबोर्ड पर लिखकर समीक्षा करना चाहें । जोर दें कि हम धार्मिक और शुद्ध बनने के लिए अनुबंधों को बनाते हैं, और हम प्रभु के राज्य को बनाने के लिए जो कुछ हमारे पास है उसे देने के अनुबंधों को भी बनाते हैं । निम्नलिखित बयान को पढ़ें :

''हम अनुबंधित लोग हैं । हम पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के लाभ के लिए—समय और पैसे और हुनर धन—जो हम हैं और जो कुछ हमारे पास है ——उसे देने का अनुबंध करते हैं'' (*पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना,* ३५) ।

• किन तरीकों से हम ''जो हम हैं और जो कुछ हमारे पास है'' को परमेश्वर के राज्य के लिए दे सकते हैं ?

• सदस्यों को प्रभु के राज्य के लिए जो सब उनके पास है को देने के लिए कभी-कभी क्या रोकता है ?

आप उन आशीषों के बारे में अपनी गवाही बांटना चाहें जो आपके जीवन में आई हैं क्योंकि आपने मन्दिर अनुबंधों को बनाया और रखा है । अथवा आप किसी दूसरे इन्डोव व्यक्ति को अपनी गवाही को बांटने के लिए कहना चाहें ।

हमें अनुबंधों के प्रति विश्वासी रहना चाहिए जो हम मन्दिर में बनाते हैं

समझाएं कि प्रभु ने कहा था, ''इसलिए जिसे बहुत दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा'' (लूका १२:४८) ।

• आपके विचार से कैसे यह आयत उन अनुबंधों पर लागू होती है जो हम मन्दिर में बनाते हैं ?

समझाएं कि प्रभु ने मन्दिर धर्मविधियों और अनुबंधों को उपलब्ध कराया है ताकि उसके बच्चे इस जीवन के उद्देश्य को समझ सकें और अनन्त जीवन के महिमायुक्त अवसरों के लिए तैयार रह सकें । जब हम इन आशीषों को प्राप्त करते हैं, हम अपनी बढ़े ज्ञान और अवसरों के योग्य जीने के लिए उत्तरदायी बन जाते हैं । जोर दें कि हमें मन्दिर में बनाए गए अनुबंधों के प्रति विश्वासी रहना चाहिए ।

• उन अनुबंधों के प्रति विश्वासी रहना क्यों ज़रूरी है जिन्हें हम मन्दिर में बनाते हैं ?

कक्षा के सदस्यों से सिद्धान्त और अनुबंध ८२:१० पढ़ने के लिए कहें ।

अध्यक्ष जोसफ फिल्डींग स्मिथ ने कहा था : ''मैं आपसे कहता हूं कि *प्रभु तब तक बंधा नहीं है, जब तक कि आप अनुबंध को रखते नहीं है* । प्रभु कभी भी अपने अनुबंध को नहीं तोड़ता । जब वह हम में से प्रत्येक के साथ अनुबंध बनाता है, वह इसे तोड़ेगा नहीं । यदि यह टूटेगा, तो हम होंगे जो इसे तोड़ेंगे । लेकिन जब यह टुट जाता है, वह हमें आशीष देने

''वह बंध जाता है जब हम वह करते हैं जो वह कहता है, लेकिन जब हम वह नहीं करते जो वह कहता है, हमसे कोई वादा नहीं है । (देखें सि.और अनु. ८२:१०) ।

के लिए जिम्मेदार नहीं होता है, और हम इसे प्राप्त नहीं करेंगे'' (*Doctrine of Salvation,* Bruce R. McConkie द्वारा संकलित, ३ किताबें, २:२५६...५७) ।

अपने अनुबंधों के प्रति विश्वसनीयता शान्ति और सुरक्षा लाएगा

समझाएं कि मन्दिर दु:खदायी संसार में शान्ति का एक स्थान और आसरा है । जब हम नियमित रूप से मन्दिर में जाते हैं और अपने अनुबंधों के प्रति विश्वासी रहते हैं, हम अपने जीवनों में शान्ति, सुरक्षा, और निर्देश पाएंगे ।

एल्डर नील ए. मैक्सवल ने कहा था, ''यदि हम अपने अनुबंधों को रखेंगे, अनुबंध हमें आत्मिक रूप से सुरक्षित रखेंगे'' (Conference Report, अप्रैल १९८७, ८७; या *Ensign,* मई १९८७, ७१ में) ।

• किन तरह से अनुबंधों ने जो आपने अब तक बनाये हैं आपकी आत्मिक रूप से सुरक्षित रखने में सहायता की है ?

बताएं कि मन्दिर में हम स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह की उपस्थिति में वापस जाने के लिए योग्य जीवन जीने का अनुबंध बनाते हैं । कभी-कभी, हमारे रोज़ाना के संघर्षों के बीच में, हम शायद सोचे कि इस प्रकार का जीवन संभव है ।

कक्षा के सदस्यों को १ नफी १७:३, १३ पढ़ने के लिए कहें ।

• प्रभु हमारी सहायता कैसे करेगा जब हम उसके पास वापस जाने के लिए प्रयत्न करते हैं के बारे में ये धर्मशास्त्र क्या शिक्षा देते हैं ? आपने इन धर्मशास्त्रों को अपने जीवन में पूरा होते हुए कैसे देखा है ?

एल्डर बोएड के. पैकर ने कहा था : ''जब आप मन्दिर में आते हैं और अपनी इन्डोवमेन्ट प्राप्त करते हैं, और वेदी पर घुटने टेकते हैं और मुहरबंद होते हैं, आप प्रलोभन के विरूद्ध सघंर्ष करते हुए, गिरते और पश्चाताप करते हुए, और फिर से गिरते और पश्चाताप करते हुए—एक साधारण जीवन जी सकते हैं और एक साधारण व्यक्ति बन सकते हैं, लेकिन हमेशा अपने अनुबंधों को रखने का इरादा करें....तब दिन आएगा जब आप आशीष पाएंगे : 'धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा; अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो' (मत्ती २५:२१)'' (*Let Not Your Heart Be Troubled,* २५७) ।

अध्यक्ष हार्वड डबल्यू. हनटर हम सभी को मन्दिर ''उपासना की व्यक्तिगत आशीष के लिए, शुद्धता और सुरक्षा के लिए जो उन पाक और पवित्र दीवारों के बीच उपलब्ध करायी गई हैं प्रायः मन्दिर में जाने का आमन्त्रण दिया था । मन्दिर सुंदरता का स्थान है, यह प्रकटीकरण का स्थान है, यह शान्ति का स्थान है । यह प्रभु का घर है । यह प्रभु के लिए पवित्र है । यह हमारे लिए भी पवित्र होना चाहिए'' (Jay M. Todd, "President Howard W. Hunter," *Ensign,* जुलाई १९९४, ५ में उद्धरित) ।

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों से मन्दिर धर्मविधियों को प्राप्त करने और स्वर्गीय पिता के साथ अनुबंधों को बनाने की आशीषों के बारे में अपनी भावनाओं को बांटने के लिए कहें ।

यदि समय अनुमति दे और विडियो प्रस्तुतिकरण *Together Forever* आपके क्षेत्र में उपलब्ध है, आप शायद प्रस्तुतिकरण को प्रस्तुत करना चाहें ।

मन्दिर धर्मविधियों को प्राप्त करने की आशीषों और स्वर्गीय पिता के साथ अनुबंधों में प्रवेश करने के सौभाग्य के बारे में गवाही दें ।

किसी को समापन प्रार्थना देने के लिए अमन्त्रित करें ।

५

प्रतीकों द्वारा प्रभु से सीखना

“मैं मनुष्य को नियम पर नियम, आज्ञा पर आज्ञा, थोड़ा यहां और थोड़ा वहां दूंगा; और धन्य वे लोग जो मेरे उपदेश को सुनते हैं” (२ नफी २८:३०) ।

उद्देश्य

सदस्यों को मन्दिर के अन्दर प्रतीकों को समझने और उनके उपयोग करने की प्रशंसा करने में सहायता करना है ।

तैयारी

१. अपने देश का झण्डा या अपने देश के झण्डे की एक तस्वीर लायें ।

२. कैसे एक बंधु मन्दिर गारमेन्ट के बारे में जवाब देता है की कहानी को संक्षिप्त करने के लिए एक कक्षा के सदस्य को कहें । कहानी *पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना* के पृष्ठ २०–२१ और २३ स्थित है ।

शिक्षक के लिए सूचना : मन्दिर धर्मविधियां और अनुबंध पवित्र होते हैं, और उनके बारे में चर्चा प्राथमिक रूप से मन्दिर के अन्दर सिमित है । इसलिए, कक्षा चर्चा इस निर्देशिका में दिये व्याख्यान तक ही सीमित होनी चाहिए ।

पाठ प्रस्तुतिकरण

किसी को आरंभिक प्रार्थना देने के लिए आमन्त्रित करें ।

कक्षा के सदस्यों से पूछें यदि उनका कोई प्रश्न है । अपनी योग्यता और प्रभु की आत्मा द्वारा नेतृत्व से प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ज़रूरी समय लें । याद रहे कि मन्दिर कार्य के कुछ पहलूओं की चर्चा मन्दिर के बाहर नहीं करनी चाहिए ।

प्रतीक हमारे दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण होते हैं

व्याख्या करें कि प्रतीकों का उपयोग हमारे दैनिक जीवन में नियमित रूप से उपयोग होते हैं । चॉकबोर्ड पर निम्नलिखित या अन्य उचित प्रतीकों को बनाये । कक्षा के सदस्यों को बताने के लिए कहें कि प्रत्येक प्रतीक का अर्थ क्या है ।

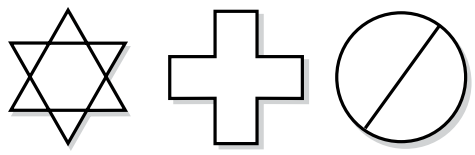

कक्षा को अपने देश के झण्डे या झण्डे की तस्वीर को दिखाएं और उनसे बताने को कहें कि झण्डे का उनसे क्या अर्थ है ।

• कौन से कुछ उद्देश्य या कुछ कार्य हैं जो देश भक्ति को दिखाते हैं ? (एक गीत, एक वर्दी, कपड़े का एक टुकड़ा, एक छुट्टी, या एक समारोह ।)

बताएं कि ये प्रतीक हैं जो देश भक्ति को प्रदर्शित करते हैं अथवा इसका प्रतिनिधित्व करते हैं ।

• प्रेम और आदर के लिए क्या कुछ प्रतीक हैं ? (एक उपहार या एक अंगुठी, एक चुम्बन या एक गले लगाना, एक हृदय आकार ।)

• क्या प्रतीक सभी लोगों को एक सा संदेश देते हैं ? क्यों अथवा क्यों नहीं ?

• हम प्रतीकों का उपयोग क्यों करते हैं ?

कक्षा के सदस्य चर्चा करें । वे शायद कुछ निम्नलिखित प्रकार के विचारों का सुझाव दें :

१. प्रतीक हमारी महत्वपूर्ण चीज़ों को याद रखने में सहायता कर सकते हैं ।

२. प्रतीक हमें निराकार सच्चाइयों के बारे में शिक्षा दे सकते हैं जो दूसरे तरीकों से सीखने में मुश्किल हो सकती हैं ।

३. प्रतीक भावनाओं का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं ।

४. प्रतीक सीखने की हमारी व्यक्तिगत तैयारी के अनुसार अलग-अलग नियमों की शिक्षा दे सकते हैं ।

व्याख्या करें कि जब प्रतीक दोहराये जाते हैं, हम उन्हें बेहतर तरीके से समझना सीखते हैं ।

यीशु मसीह और उसके भविष्यवक्ताओं ने प्रतीकों का उपयोग किया था

समझाएं कि उद्धारकर्ता हमेशा प्रतीकों का उपयोग करता था जब वह शिक्षा देता था ।

• कौन से कुछ उदाहरण हैं जिसमें प्रभु ने प्रतीकों का उपयोग करके शिक्षा दी थी ?

कक्षा के सदस्य इस प्रकार की चीज़ों का जिक्र कर सकते हैं जैसे कि खोई भेड़ (देखें मत्ती १८:१२–१४); एक सरसों का बीज़ (देखें मत्ती १३:३१–३२); या अनमोल मोती (देखें मत्ती १३:४५–४६) ।

• आपके विचार से उद्धारकर्ता ने प्रतीकों का उपयोग क्यों किया था जब उसने शिक्षा दी थी ?

कक्षा के सदस्य चर्चा करें । फिर निम्नलिखित बयान की समीक्षा करें :

''प्रभु, एक निपुण शिक्षक, ने स्वंय अपने शिष्यों को शिक्षा नियमित रूप से संकेतों में दी थी, सांकेतिक वस्तुओं का उपयोग करना उन बातों को समझाने का एक सरल तरीका है जो अन्यथा समझने में मुश्किल हो सकती हैं । उसने उन साधारण अनुभवों की बात की थी जो उसके शिष्यों के जीवनों से लिये गये थे, और उसने मुर्गी और चुजों, चिड़ियाओं, फूलों, लोमड़ी, पेड़ों, सेंध मारने वाले चोरों, लुटेरों, डुबते सुरज, अमीर और गरीब । . . . और दर्जनों अन्यों वस्तुओं का उपयोग किया था । उसने सरसों के बीज की, मोती की बात की थी । वह अपने सुनने वालों को शिक्षा देना चाहता था, इसलिए उसने सांकेतिक अर्थों में साधारण वस्तुओं की बात की थी । इनमें से कोई भी वस्तु रहस्यपूर्ण या अस्पष्ट नहीं है, और ये सभी सारी सांकेतिक हैं'' (*पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना,* ८) ।

समझाएं करें कि भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों ने प्रायः यीशु मसीह और उसके प्रायश्चित बलिदान के बारे में शिक्षा देने के लिए प्रतीकों का उपयोग किया था । यीशु मसीह का प्रायश्चित सुसमाचार और सारी आशीषों का जो हम प्राप्त करते हैं मूल है । यह उद्धार को संभव बनाता है । इसलिए, धर्मशास्त्रों में अधिकतर प्रतीक हमें उद्धारकर्ता और उसके बलिदान के बारे में शिक्षा देते हैं ।

कक्षा के सदस्यों को मूसा ६:६३ पढ़ने के लिए कहें ।

• पृथ्वी पर कौन सी चीज़ें उद्धारकर्ता की गवाही देते हैं ?

कक्षा के सदस्यों को अलमा १३:१६ पढ़ने के लिए कहें ।

• किन तरीकों से पौरोहित्य धर्मविधियां उद्धारकर्ता की गवाही देती हैं ?

बताएं कि उद्धारकर्ता के प्रायश्चित करने से पहले, उसके अनुबंधित लोग उसके प्रायश्चित बलिदान के एक प्रतीक के रूप में जानवरों की बली चढ़ाते थे (देखें मूसा ५:४–८) । वह प्रथा उद्धारकर्ता की मृत्यु और पुनरूत्थान के साथ समाप्त हो गई थी । अब प्रभु ''हमें [उसे] एक टूटे हृदय और पश्चातापी आत्मा का बलिदान करने के लिए आज्ञा देता है'' (३ नफी ९:२०) । और पौरोहित्य धर्मविधियां लगातार हमें उद्धारकर्ता के प्रायश्चित बलिदान को याद रखने में सहायता करती हैं । एल्डर रसल एम. नेलसन ने शिक्षा दी थी :

''सुसमाचार की ज़रूरी धर्मविधियां प्रायश्चित को प्रतीक करती हैं । पानी में डूबोकर बपतिस्मा मुक्तिदाता के मृत्यु, दफनाने, और पुनरूत्थान का प्रतीक है । प्रभुभोज को लेना बपतिस्मा अनुबंधों को नया करता है और उद्धारकर्ता के टूटे मांस और हमारे लिए उसके खुन की हमारी याद्दाशत को नया करता है । मन्दिर की धर्मविधियां प्रभु के साथ हमारे नये संबंध के प्रतीक को प्रकट करती हैं और परिवारों को हमेशा के लिए मुहरबंद कर देती हैं'' (Conference Report अक्टू. १९९६, ४७; या *Ensign,* नव. १९९६, ३५ में) ।

प्रतीक हमें सच्चाई की शिक्षा देते हैं यदि हम आत्मिक रूप से भावुक हैं

समझाएं कि जब उद्धारकर्ता पृथ्वी पर जीवित था, उसके शिष्यों ने उससे पूछा था कि वह दृष्टांतों में क्यों बात करता है । दृष्टांत कहानी होती हैं जो प्रायः सांकेतिक भाषा का उपयोग करके, महत्वपूर्ण सच्चाइयों की शिक्षा देती हैं । उद्धारकर्ता ने क्या कहा था को जानने के लिए कक्षा के सदस्य मत्ती १३:१०–१२ को पढ़ें ।

• आपके विचार से उद्धारकर्ता का क्या अर्थ था जब उसने यह कहा था ?

समझाएं कि प्रभु उन लोगों को सच्चाई प्रकट करता है जो इसे समझने के लिए आत्मिक रूप से तैयार होते हैं । वे जो सच्चाई को विश्वास और आज्ञा-पालन के साथ प्राप्त करते हैं निरन्तर और सच्चाइयां प्राप्त करते हैं । वे जो आत्मिक रूप से तैयार नहीं हैं जो सच्चाई को प्राप्त करने में असफल होते हैं अथवा इसे संदेही हृदय के साथ प्राप्त करते हैं वे धीरे-धीरे सच्चाई को खो देंगे जो उनके पास है ।

प्रतीकों के साथ कहानियां इस तरह से सच्चाई को प्रकट करती हैं कि वे जो आत्मिक रूप से तैयार है प्रतीकों के अर्थ को समझ पाते हैं । वे जो तैयार नहीं हैं अर्थ को नहीं समझ पाते हैं ।

उद्धारकर्ता के समय में कुछ लोग उसके दृष्टान्तों के संदेश को समझ पाये थे, लेकिन बहुत से नहीं समझ पाये थे । आज भी वही सच है । गिरजाघर के धार्मिक सदस्यों के बीच आत्मिक समझ के कई स्तर हैं ।

कक्षा के सदस्य २ नफी २८:३० और सिद्धान्त और अनुबंध ४२:४९–५० पढ़ें ।

• परमेश्वर से हम सच्चाई कैसे सीखते हैं के बारे में ये धर्मशास्त्र क्या शिक्षा देते हैं ?

समझाएं कि यह एक स्तर तक आत्मिक रूप से विकसित होना हम में से सभी के लिए संभव हैं जहां हम सुसमाचार में, धर्मशास्त्रों में, और विशेषकर मन्दिर में उपयोग किये जाने वाले प्रतीकों को समझ सकते हैं ।

अत्याधिक सांकेतिक शिक्षाएं मन्दिर में प्राप्त की जाती हैं

समझाएं कि पृथ्वी पर अत्याधिक पवित्र सांकेतिक शिक्षाएं मन्दिर में प्राप्त की जाती हैं, सांकेतिक तरीके से, मन्दिर की शिक्षाएं और धार्मिक विधियां हमें ऊपर अनन्त जीवन की ओर ले जाती हैं, और परमेश्वर की उपस्थिति में एक सांकेतिक प्रवेश के साथ समाप्त हो जाती है । लोगों का सुंदर रिति से वर्णन, शारीरिक व्यवस्था, वस्त्र पहनना, चिन्ह देना, और मन्दिर में सारी घटनाएं सांकेतिक होती हैं ।

''सारी बातों में समानता है, और सारी चीज़ों को उसकी गवाही देने के लिए रचा और बनाया गया है, दोनों लौकिक और आत्मिक चीज़ें'' (मूसा ६:६३) ।

कुछ प्रतीक सरल होते हैं, और अर्थ एकदम स्पष्ट होता है । मन्दिर स्वयं ही एक प्रतीक है :

''यदि आपने रात में किसी मन्दिर को देखा है, पूरी तरह से प्रकाशमय, आप जानते हैं कि वह कितना प्रभावी दृश्य हो सकता है । प्रभु का घर, प्रकाश में घिरा, अन्धकार में से बाहर खड़ा हुआ, यीशु मसीह के सुसमाचार की शक्ति और प्रेरणा का प्रतीक बन जाता है दुनिया जो आत्मिक अन्धकार में बहुत डुबी है में एक मशाल के रूप में खड़े हुए'' (*पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना,* १०) ।

मन्दिर वस्त्र भी सांकेतिक होते हैं । जब हम मन्दिर में प्रवेश करते हैं, हम आम कपड़ों को उतार कर सफ़ेद मन्दिर के वस्त्र पहनते हैं, जो शुद्धता का प्रतीक है । अध्यक्ष जेम्स ई. फॉस्ट ने कहा था :

''मन्दिर उपासना का एक मूल भाग नियम है कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता ।' [प्रेरितों के काम १०:३४ ।] मन्दिरों की पवित्र दीवारों के अन्दर, वहां पद, धन, प्रतिष्ठा, जात-पात, अथवा शिक्षा की कोई मान्यता नहीं होती । सभी सफ़ेद वस्त्र में होते हैं । सभी एक ही प्रकार का आदेश प्राप्त करते हैं । सभी एक ही प्रकार के अनुबंध और वादे करते हैं । सभी एक ही महान, अनन्त आशीषों को प्राप्त करते हैं यदि वे उनका दावा करने के लिए योग्य रूप से जीते हैं । सभी अपने सृष्टिकर्ता के सामने बराबर होते हैं'' (Conference Report, अप्रैल १९९७, २३; या *Ensign,* मई १९९७, २० में) ।

समझाएं कि सदस्य जो मन्दिर धर्मविधियों को प्राप्त करते हैं और परमेश्वर के साथ अनुबंधों को बनाते हैं विशेष गारमेन्ट (अन्दर के वस्त्र) अपने पूरे जीवन भर पहनते हैं । निम्नलिखित बयान को पढ़ें :

''गारमेन्ट पवित्र अनुबंधों का प्रतिनिधित्व करता है । यह विशुद्धता को बढ़ावा देता है और पहनने वाले के लिए एक ढाल और सुरक्षा बन जाता है...गारमेन्ट, शरीर को ढकते हुए, [मन्दिर में बनाये अनुबंधों] को दृष्टिगत और शारीरिक तौर से याद दिलाने वाला है । अनेक

गिरजाघर के सदस्यों के लिए गारमेन्ट ने सुरक्षा की आड़ बनाई है जब पहनने वाले ने प्रलोभन का सामना किया है । अन्य बातों में यह परमेश्वर के कानूनों के प्रति हमारे गहरे सम्मान को संकेत द्वारा प्रकट करता है—जिनमें नैतिक आदर्श भी है'' (*पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना,* २०, २३) ।

कैसे एक बंधु ने मन्दिर गारमेन्ट के उद्देश्य की व्याख्या की थी को संक्षिप्त करने के लिए नियुक्त कक्षा सदस्य को कहें (देखें *पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना,* २०–२१, २३) ।

समझाएं कि मन्दिर संस्कार का लगभग प्रत्येक पहलू सांकेतिक होता है । इसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को उतना ही आत्मिक रूप से संवेदनशील बनने की तैयारी करनी चाहिए जितना मन्दिर इन्डोवमेन्ट के सांकेतिक स्वभाव के लिए संभव होता है ।

• किसी व्यक्ति को मन्दिर में आत्मिक रूप से संवेदनशील होने में बाधा डाल सकती है ?

कक्षा के सदस्य शायद निम्न प्रकार की बातों का जिक्र कर सकते हैं :

१. व्यक्ति शायद योग्य न हो । व्यक्ति जो सच्चे रूप से पश्चाताप करने में असफल हो गया है और मन्दिर के लिए नम्रता और प्रार्थना पूर्वक तैयार नहीं हुआ है उन्हें लगेगा कि प्रतीक बेजान हैं और उनके अर्थ छुपा लिये जाएंगे ।

२. व्यक्ति में विश्वास की कमी हो सकती है । व्यक्ति जो यीशु मसीह और मन्दिर संस्कार में विश्वास नहीं करता है मन्दिर इन्डोवमेन्ट को समझने के लिए ज़रूरी पवित्र आत्मा से प्रेरणा को प्राप्त नहीं कर पाएगा ।

३. व्यक्ति संस्कारों के शारीरिक संकेत पर अधिक ध्यान देता है कि वह प्रतीकों द्वारा प्रस्तुत की गई शक्तिशाली शिक्षाओं को अनदेखा कर कर सकता या सकती है ।

• हम मन्दिर में आत्मिक रूप से संवेदनशील बनने के लिए कैसे तैयारी कर सकते है ?

निष्कर्ष

बताएं कि वे जो मन्दिर पहली बार जा रहे हैं बहुत सी नयी बातों को सीखने और प्रभु की आत्मा की शक्ति को महसूस करने की आशा कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को अपने मन्दिर अनुभवों के लिए अपने आप को आत्मिक रूप से तैयारी करने के लिए प्रोत्साहित करें । उन्हें याद दिलाएं कि जो प्रस्तुत किया जाता है वे सभी एक ही दौरे में नहीं समझा जा सकता । उन्हें हमेशा मन्दिर वापस जाना चाहिए जहां तक संभव हो ताकि वे नियमित रूप से सीख सकें और अपनी आत्मिक भावनाओं को नया कर सकें ।

किसी को समापन प्रार्थना देने के लिए अमन्त्रित करें ।

पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना

''प्रभु ने कहा था कि जहां तक उसके लोग उसके लिए उसके नाम से घर बनाते हैं और किसी अशुद्ध वस्तु को इसके अन्दर आने और इसे बरबाद करने नहीं देते हैं, उसकी महिमा इसके ऊपर रहेगी'' (देख सि. और अनु. ९७:१५) ।

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को मन्दिर में योग्य रूप से प्रवेश करने के लिए तैयार करना ।

पाठ प्रस्तुतिकरण

किसी को आरंभिक प्रार्थना देने के लिए आमन्त्रित करें ।

कक्षा के सदस्यों से पूछें यदि उनका कोई प्रश्न है । अपनी योग्यता और प्रभु की आत्मा द्वारा नेतृत्व से प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ज़रूरी समय लें । याद रहे कि मन्दिर कार्य के कुछ पहलूओं की चर्चा मन्दिर के बाहर नहीं करनी चाहिए ।

प्रत्येक व्यक्ति को मन्दिर के लिए तैयारी करनी चाहिए

समझाएं कि प्रत्येक व्यक्ति उन बातों को करने के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार होता है जो मन्दिर की पूर्ण आशीषों की ओर ले जाती हैं ।

संक्षिप्त में निम्नलिखित पांच विचारों की चर्चा करें । प्रत्येक उस मार्ग को प्रस्तुत करता है जिसमें हमें मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करनी चाहिए । आप शायद प्रत्येक विषय को चॉकबोर्ड पर लिखना चाहें जब आप इसकी चर्चा करते हैं ।

१. प्रत्येक व्यक्ति को योग्य होना चाहिए ।

कक्षा के सदस्यों को सिद्धान्त और अनुबंध ९७:१५–१७ पढ़ने के लिए कहें ।

• योग्य बनने के महत्व के बारे में यह लेखांश आपको क्या शिक्षा देता है जब आप मन्दिर में प्रवेश करते हैं ?

अध्यक्ष हार्वड डबल्यू. हन्टर ने हमें ''attitudes and righteous behaviors that the Lord pointed us toward in the counsel He gave to the Kirtland Saints through the Prophet Joseph Smith as they were preparing to build a temple पर विचार करने को कहा था ।''

यह सलाह सिद्धान्त और अनुबंध ८८:११९ में दी गई है । कक्षा के सदस्यों से इस लेखांश को पढ़ने के लिए कहें ।

कक्षा के सदस्यों को अध्यक्ष हन्टर द्वारा पूछे गये प्रश्न पर भी विचार करने के लिए कहें : ''क्या ये व्यवहार और बर्ताव दरअसल जो हम में से प्रत्येक बनने की इच्छा और प्रयत्न करता है के लिए विचारणीय हैं ?'' ("The Great Symbol of Our Membership," *Ensign,* अक्टू. १९९४, २) ।

२. प्रत्येक व्यक्ति को विनम्र होना चाहिए ।

प्रत्येक व्यक्ति को उच्च से शिक्षा पाने के लिए एक इच्छा के साथ, विनम्रता में मन्दिर में प्रवेश करना चाहिए ।

• विनम्रता क्यों इतनी ज़रूरी है जब हम मन्दिर में सेवा करते हैं और सीखते हैं ?

कक्षा के सदस्य सिद्धान्त और अनुबंध १३६:३२–३३ पढ़ें ।

• यह लेखांश विनम्रता के महत्व के बारे में क्या शिक्षा देता है ? पहली बार मन्दिर जाने के लिए इस सलाह को आप कैसे लागू कर सकते हैं ?

३. प्रत्येक को समझना चाहिए कि मन्दिर धर्मविधियों और अनुबंध प्राप्त करना अनन्त जीवन पाने के लिए महत्वपूर्ण है ।

''प्रभु ने सन्तों को अपने आप को व्यवस्थित करने के लिए, प्रत्येक ज़रूरी चीज़ को तैयार करने के लिए, प्रार्थना, उपवास, विश्वास, सीखने, महिमा, और क्रम का घर बनाने—वैसा ही परमेश्वर का घर बनाने के लिए आज्ञा दी थी'' (देखें सि. और अनु. ८८:११९) ।

अध्यक्ष हैरोल्ड बी. ली ने कहा था : ''मन्दिर संस्कार एक बुद्धिमान स्वर्गीय पिता द्वारा बनाई गई हैं जिसने उन्हें हमें इन अन्तिम दिनों में हमारे पूरे जीवन भर एक नेतृत्व और सुरक्षा के रूप में प्रकट किया है, ताकि आप और मैं सिलेस्टियल राज्य में उत्कर्ष के योग्य होने के लिए असफल न हो सकें जहां परमेश्वर और मसीह रहते हैं'' ("Enter a Holy Temple," *Improvement Era,* जुन १९६७, १४४) ।

अध्यक्ष जोसफ फिल्डींग स्मिथ ने कहा था : ''ये आशीषें हमें, हमारी विश्वसनीयता के द्वारा निश्चित की गई हैं, अनमोल मोती जो प्रभु ने हमें दिया है, क्योंकि *ये ही महान आशीषें हैं जो हम इस जीवन में प्राप्त कर सकते हैं* । गिरजाघर में आना बहुत ही अच्छी बात है, लेकिन आप तब तक उत्कर्षता नहीं प्राप्त कर सकते हैं जब तक आपने प्रभु के घर में अनुबंधों को नहीं बनाया हो और उन कुंजियों और अधिकारों को प्राप्त नहीं किया है जो वहां दी गई हैं और जो पृथ्वी में आज और किसी स्थान में नहीं दी जा सकती है'' (*Doctrines of Salvation,* comp. Bruce R. McConkie द्वारा संकलित, ३ किताबें, २:२५३) ।

४. प्रत्येक व्यक्ति को मन्दिर गारमेन्ट पहनने के महत्व को समझना चाहिए ।

समझाएं कि वे जिन्होंने मन्दिर संस्कार में भाग लिया है उन्होंने पवित्र पौरोहित्य के गारमेन्ट को पहनने का सौभाग्य पाया है । गिरजाघर के बयान में, प्रथम अध्यक्षता ने कहा था :

''गिरजाघर के सदस्य जिन्होंने मन्दिर में गारमेन्ट पहने हैं उन्होंने इसे अपने पूरे जीवन भर पहनने के लिए अनुबंध बनाये हैं । इसका यह अर्थ है कि इसे रात और दिन हर समय अन्दर के वस्त्र के रूप में पहना जाता है....

''मूल नियम गारमेन्ट को पहनना होना चाहिए न कि इसे उतारने के अवसर ढूंढना....जब गारमेन्ट उतारा जाये,...इसे जल्दी से वापस पहन लेना चाहिए ।

''विशुद्धता के नियम और शरीर को उचित प्रकार से ढके रखना अनुबंध में अडिग हैं और किस तरह के कपड़े पहने जाने चाहिए में निर्णय लेने में आपकी सहायता करता है । गिरजाघर के इन्डोव सदस्य प्रभु के साथ अपने बनाएं गए पवित्र अनुबंधों को याद रखने और प्रलोभन और बुराई के विरूद्ध सुरक्षा के रूप में गारमेन्ट पहनते हैं । इसे जिस प्रकार पहना जाता है वह उद्धारकर्ता का अनुसरण करने के अन्दूरूनी अनुबंध की बाहरी उक्ति है'' (First Presidency letter, १० अक्टू. १९८८) ।

५. प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत और पवित्र उपासना के लिए तैयार रहना चाहिए ।

मन्दिर में, संस्कारों के पहले, के दौरान, बाद में, व्यक्ति के लिए स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के नजदीक जाने के लिए ध्यान लगाने के अवसर होते हैं । हर किसी को ऐसे प्रश्नों का सामना करना पड़ता है जिन्हें उत्तरों की ज़रूरत होती है, ऐसे बोझ जिन्हें हल्का करने की ज़रूरत होती है, ऐसी समस्याएं जिन्हें सुलझाने की ज़रूरत होती है । बहुतों ने दुनिया से दूर और स्वर्गीय पिता के साथ बातचीत करने के लिए एक स्थान के रूप में मन्दिर की सराहना की है । बहुतों ने मन्दिर में उत्तरों, शान्ति, और आनन्द को पाया है ।

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा था : ''मन्दिर व्यक्तिगत प्रकटीकरण के स्थान होते हैं । मैं जब कभी समस्या या मुश्किल द्वारा दबा होता, मैं उत्तर के लिए अपने हृदय में एक प्रार्थना के साथ प्रभु के घर जाता । ये उत्तर साफ और सुस्पष्ट ढंग से आये हैं'' ("What I Hope You Will Teach Your Children about the Temple," *Ensign,* अगस्त १९८५, ८)।

समझाएं कि मन्दिर में, हम उन लोगों के नामों को जमा कर सकते हैं जिनको विशेष ज़रूरत हो ताकि वे जो मन्दिर जाते हैं इन लोगों के बदले में अपने विश्वास और प्रार्थनाओं में एक साथ हो सकें ।

प्रथम मन्दिर दौरे के लिए विशेष तैयारियां

निम्नलिखित जानकारी प्रत्येक व्यक्ति की प्रथम दौरे के लिए सारी ज़रूरी तैयारियों को करने में सहायता करेगी और निश्चित करेगी कि यह दौरा ऊपर उठाने वाला हो । कक्षा के सदस्यों के साथ जानकारी की चर्चा करें जो उनकी परिस्थितियों में लागू होती हो ।

१. *मन्दिर संस्तुति* । मन्दिर संस्तुति प्राप्त करें । ध्यान रहे कि मन्दिर जाते समय अपनी संस्तुति को अपने साथ ले जायें, क्योंकि सिर्फ वो ही लोग अन्दर जा सकते हैं जिनके पास वैध संस्तुति होती है । जब आप योग्यता से जीते हैं, संस्तुति के साथ अगले दो वर्षो के दौरान जितना बार आपकी इच्छा करे आप गिरजाघर के किसी भी मन्दिर में जा सकते हैं । अपनी मन्दिर संस्तुति को नया करने के लिए, आपका धर्माध्यक्षता के एक सदस्य या आपके शाखा अध्यक्ष और आपकी स्टेक अध्यक्षता के एक सदस्य या मिशन अध्यक्ष द्वारा साक्षात्कार होना चाहिए ।

२. *जाने की तैयारी और समय तय करना* । इन्डोवमेन्ट और मुहरबंद धर्मविधि प्राप्त करने के लिए आपके मन्दिर में जाने से पहले, समय तय करने के लिए मन्दिर में फोन करें । पता करें कि आपको मन्दिर कब पहुंचना है, आप वहां कितने लम्बे समय तक रूक सकते हैं, और आपको अपने साथ क्या ले जाना चाहिए । यदि ज़रूरी हो तो अनुवाद सहायता के लिए कहें ।

३. *यात्रा की योजनाएं* । यदि आप मन्दिर से बहुत दूर रहते हैं, आपको निम्नलिखित पर विचार करना चाहिए :

- पहले से ही परिवहन, रहने, खाने की व्यवस्था कर लें । यदि संभव हो समूह के साथ जाएं इसमें आपको फायदा हो सकता है ।

- यदि ज़रूरी हो, दूसरे देश की मुद्रा में जहां मन्दिर है अपने धन को बदलने की व्यवस्था करें ।

• सारा खर्चा उठाने के लिए पर्याप्त धन ले जायें । आपको शायद अतिरिक्त गारमेन्ट खरीदने, मन्दिर के कपड़े किराये पर लेने और रहने और आने जाने के लिए धन की ज़रूरत पड़े । (ध्यान दें कि मन्दिर के किराये के कपड़े बहुत से मन्दिरों में उपलब्ध नहीं होते हैं । प्रथम अध्यक्षता सारे सदस्यों को अपने स्वयं के मन्दिर के कपड़ों को खरीदने के लिए प्रोत्साहित करती है ।)

४. *पहनावा* । वैसा ही पहनावा पहने की योजना करें जैसे कि आप तब पहनते हैं जब रविवार सभाओं में जाते हैं । स्त्रियों को मन्दिर में पतलुन नहीं पहनना चाहिए ।

५. *अनुचर* । सभी जो पहली बार मन्दिर जा रहे हैं उनके साथ एक अनुचर होना चाहिए । यह एक ही लिंग का रिश्तेदार या मित्र हो सकता है जो पहले मन्दिर जा चुका हो, अथवा कोई मन्दिर कार्यकर्ता सहायता कर सकता है । मन्दिर में कार्यकर्ता सारे समय मित्रभाव नेतृत्व देंगे ।

६. *मुहरबंद कार्य* । यदि आप अपने मृत पूर्वजों के लिए मुहबंद कार्य करने की योजना बनाते हैं, आपको अपने साथ पूर्ण पारिवारिक समूह लेखा मन्दिर ले जाना चाहिए । यदि आप और आपका जीवन साथी मुहरबंद होते हैं अथवा यदि आप अपने बच्चों को अपने साथ मुहरबंद करते हैं, आपके पास अपने स्वयं का पारिवारिक समूह लेखा होना चाहिए । यदि आप विवाह करने जा रहे हैं, आपको सारे स्थानीय वैधानिक कानूनों का पालन करना चाहिए और अपने साथ एक वैध विवाह प्रमाणपत्र लाना चाहिए । जीवित और मृत दोनों के लिए कैसे मन्दिर धर्मविधियों को उपलब्ध कराये के बारे में अधिक स्पष्ट जानकारी के लिए *Member's Guide to Temple and Family History Work* (34697) को ध्यान से पढ़ें । आप मन्दिर में जहां आप जा रहे हैं मन्दिर अभिलेखी से संपर्क कर सकते हैं ।

७. *बच्चों की देख-रेख करना* । यदि बच्चे मुहरबंद संस्कार में हिस्सा लेने के लिए मन्दिर में आ रहे हैं, उनकी मन्दिर युवा केन्द्र में देख रेख की जाएगी जब तक उनका मुहरबंद कमरे में आपके साथ जुड़ने का समय नहीं आ जाता । बच्चों के लिए संस्कार के लिए सफ़ेद कपड़े उपलब्ध कराये जाएंगे । मुहरबंद संस्कार के पूरा हो जाने के बाद, वे आपका इन्तजार करने के लिए वापस केन्द्र में चले जाएंगे । जो बच्चे मुहरबंदी में शामिल नहीं हो रहे हैं उनके लिए मन्दिर में किसी देख-रेख को उपलब्ध नहीं कराया जाएगा ।

८. *मन्दिर गारमेन्ट* । मन्दिर जाने से पहले आपको एक या दो जोड़ी मन्दिर गारमेन्ट खरीदने की ज़रूरत होगी । मन्दिर जाने से पहले इन्हें न पहने । अपनी इन्डोवमेन्ट प्राप्त करने के बाद और जब संतुष्ट हो कि आपने अपनी इच्छा के नाप और कपड़े की पहचान कर ली है, आप अतिक्ति गारमेन्ट के जोड़ी खरीद सकते हैं । कुछ लोग दूसरे जोड़ी खरीदने से पहले यह निश्चित करने के लिए अपने नये जोड़ी गारमेन्ट को धोना पसन्द करते हैं कि वे सही आ रहे हों । मन्दिर गारमेन्ट गिरजाघर द्वारा बनाये जाते हैं और गिरजाघर वितरण केन्द्र द्वारा खरीदे जा सकते हैं ।

''मन्दिर संस्कार एक बुद्धिमान स्वर्गीय पिता द्वारा बनाएं गये हैं...ताकि आप और मैं सिलेस्टियल राज्य में उत्कर्ष के योग्य होने के लिए असफल न हो सकें'' (अध्यक्ष हैरोल्ड बी. ली) ।

९. *मन्दिर वस्त्र* । प्रथम अध्यक्षता ने सदस्यों को अपने स्वयं के मन्दिर वस्त्रों को खरीदने और उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया है । कुछ मन्दिरों में कम दामों में मन्दिर वस्त्रों को किराया पर लिया जाना संभव है, लेकिन यह सदस्यों के लिए सही होगा कि वे स्वयं के मन्दिर वस्त्र खरीदे और उनकी देखभाल करें । इस वस्त्र को कहां से खरीदा जा सकता है के बारे में धर्माध्यक्ष अथवा शाखा अध्यक्ष जानकारी उपलब्ध करा सकते हैं ।

बहनें अपने मन्दिर विवाह के लिए अपने विवाह के पहनावों को पहन सकती हैं, लेकिन पहनावा सफ़ेद होना चाहिए, लम्बी बाजुएं होनी चाहिए, आकार और कपड़े में सुशील होना चाहिए, वस्त्र का लहराता हुआ छोर नहीं होना चाहिए, और अधिक सजावट से मुक्त होना चाहिए ।

निष्कर्ष

मन्दिर कार्य की पवित्रता की अपनी गवाही बांटें । मन्दिर में जाने के लिए कक्षा सदस्यों की तैयारी को देखने में अपनी खुशी को व्यक्त करें ।

किसी को समापन प्रार्थना करने के लिए अमन्त्रित करें ।

इस पाठ के बाद, कक्षा में भाग लेने वाले और शिक्षकों को एक साथ जहां संभव हो मन्दिर में जाना चाहिए ।

मन्दिर में जाने की आशीषों का नियमित रूप से आनन्द उठाना

''प्रभु ने कहा था कि उसने मन्दिर को स्वीकार किया है और उसका नाम वहां रहेगा, और वह मन्दिर में अपने लोगों को दया में अपने आप को प्रकट करेगा'' (देखें सि. और अनु. ११०:७) ।

उद्देश्य

मन्दिर में कक्षा सदस्यों के पहले दौरे के विषय में बात करें और उनकी अपने जीवन भर मन्दिर का आनन्द उठाने के लिए तैयारी में सहायता करें ।

तैयारी

१. इस पाठ को एक बांटने का समय बनाने के लिए तैयार रहें । अधिकतर कक्षा के सदस्य मन्दिर के लिए अपने प्रथम दौरे पर चर्चा करना चाहेंगे ।

२. कक्षा के एक सदस्य को सिद्धान्त और अनुबंध ११०:१–१० पढ़ने और इसके बारे में अपनी भावनाओं को बांटने के लिए तैयार होकर आने के लिए नियुक्त करें ।

३. *पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना,* पृष्ठ २३–२४ में प्रस्तुत एल्लियाह के बारे में जानकारी को संक्षिप्त करने के लिए कक्षा के एक सदस्य को नियुक्त करें ।

४. प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार रहें जो शायद मन्दिर के पहले दौरे के दौरान उठे हों, लेकिन उन प्रश्नों या जानकारी पर चर्चा न करें जिनकी सिर्फ मन्दिर में चर्चा की जानी चाहिए । जहां ऐसे प्रश्न आते हैं, व्यक्तियों को मन्दिर का दूसरी बार दौरा करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

पाठ प्रस्तुतिकरण

किसी को आरंभिक प्रार्थना करने के लिए आमन्त्रित करें ।

कक्षा के सदस्यों से पूछें यदि उनका कोई प्रश्न है । अपनी योग्यता और प्रभु की आत्मा द्वारा नेतृत्व से प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ज़रूरी समय लें । याद रहे कि मन्दिर कार्य के कुछ पहलूओं की चर्चा मन्दिर के बाहर नहीं करनी चाहिए ।

मन्दिर सेवा के लिए एक प्रेम को बनाये रखना

• आपको कैसा महसूस हुआ था जब आप मन्दिर में थे ?

समझाएं कि मन्दिर सेवा उन लोगों के जीवन में निरन्तर आशीषें लाएगी जो प्रायः मन्दिर जाते हैं । कक्षा के सदस्यों को बताएं कि जिस समय मन्दिर में उनका अनुभव अभी भी उनके मनों में ताजा है, वे शायद इसके बारे में अपनी भावनाओं को अपनी दैनिकी में लिखना चाहें । उन्हें याद दिलाये कि यद्यपि वे अपनी भावनाओं को अंकित कर सकते हैं, उन्हें मन्दिर कार्य का कुछ ब्योरा नहीं देना चाहिए, जिनकी मन्दिर के बाहर चर्चा नहीं की जानी चाहिए ।

• अपने पूरे जीवन भर मन्दिर सेवा के लिए प्रेम बनाये रखने के लिए आप क्या कर सकते हैं ?

कक्षा के सदस्यों के विचारों को चॉकबोर्ड पर लिखें । आप शायद निम्नलिखत विचारों को भी प्रस्तुत करना चाहें :

१. हर दिन मन्दिर अनुभव पर चिंतन करें ।

समझाएं कि कुछ लोगों के पास अन्यों के मुकाबले मन्दिर जाने के अधिक अवसर होते हैं । परन्तु एक बार हम मन्दिर हो आये हों और वहां आत्मा को महसूस किया हो, हमें हर दिन मन्दिर संस्कारों पर चिंतन करने और हमारे बनाये गये अनुबंधों पर विचार करने के अवसर को लेना चाहिए । ऐसा करना हमें हर दिन अधिक नेक तरीकों में सोचने और कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेगा ।

हमें मन्दिर के बारे में हर बात याद न रहे, लेकिन हम प्रत्येक दौरे के बाद जितना अधिक संभव हो सके उतना याद करने की कोशिश करनी चाहिए । हमें मन्दिर के बारे में धर्मशास्त्रों और भविष्यवक्ताओं के वचनों का भी अध्ययन करना चाहिए । इनमें से कुछ इस पाठ्यक्रम में प्रस्तुत किये जा चुके हैं ।

आप शायद कक्षा के सदस्य को निम्नलिखित बयान को संक्षिप्त करने को कहें, जो *पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना* में पृष्ठ १० पर है :

मन्दिर की विधि पहली बार पूरी तरह से समझी नहीं जाएगी । यह सिर्फ कुछ हद तक समझी जाएगी। दुबारा और दुबारा और दुबारा वापस आएं । वे बातें जिन्होंने आपको परेशान किया है या वे बातें जो व्याकुलता उत्पन्न कर रही हैं या वे बातें जो रहस्यमय रहीं हो आपको समझ आ जाएगी..

''जब आपके पास मन्दिर में इन्डोवमेन्ट अधिवेशन में जाने का अथवा मुहरबंद की साक्षी होने का अवसर मिले, आपके सामने प्रदर्शित जो आप देखते हैं के गहरे अर्थ पर चिंतन करें । और आपके दौरे के बाद के दिनों में इन बातों को अपने मन में रखें; चुपचाप से और प्रार्थनापूर्वक इनकी समीक्षा करें और आप पाएंगे कि आपका ज्ञान बढ़ गया है ।

''मन्दिर अनुभव का एक महान मूल्य यह है कि इस पृथ्वी से संबंधित परमेश्वर के उद्देश्य की बड़ी समझ को प्रस्तुत करता है । जब हम एक बार मन्दिर होकर आ जायें (और हम वापस जा सकते हैं और अपनी याद्दाशत को ताजा कर सकते हैं जीवन की घटनाएं योजना में सही । हम देख सकते हैं कि योजना के अनुसार हम कहां खड़ें हैं, और हम तुरन्त जान सकते हैं कि जब हम पथ से अलग होते हैं ।''

२. याद रखें कि सारी मन्दिर उपासना का केन्द्र उद्धारकर्ता, यीशु मसीह है ।

धर्मशास्त्र शिक्षा देते हैं कि मन्दिर बनाने का एक महत्वपूर्ण कारण है ताकि मनुष्य के पुत्र को अपने लोगों को अपने आप को प्रकट करने के लिए स्थान मिले (सि. और अनु. १०९:५) । मन्दिर के प्रतीक और धार्मिक विधियां उद्धारकर्ता पर हमारे ध्यान को केन्द्रीत करने में सहायता करती हैं ।

समझाएं कि उद्धारकर्ता ने अपने आप को कर्टलैंड मन्दिर में प्रकट किया था । वह मन्दिर को अपने घर के रूप में स्वीकार करने के लिए जोसफ स्मिथ और ऑलिवर काऊड्री को प्रकट

हुआ था । इस दौरे को सिद्धान्त और अनुबंध ११०:१–१० में अंकित किया गया था । नियुक्त कक्षा के सदस्य को इस लेखांश को पढ़ने और इस पर टिप्पणी करने के लिए कहें ।

• उद्धारकर्ता ने उन लोगों को कौन सी आशीषों का वादा किया था जिन्होंने मन्दिर को बनाया था और उसमें गये थे ?

मन्दिर में, परिवार अनन्तता के लिए एक साथ मुहरबंद होते हैं

कक्षा के सदस्यों से मलाकी ४:५–६ पढ़ने के लिए कहें ।

पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना, पृष्ठ २३–२४ में प्रस्तुत एल्लियाह के बारे में जानकारी को संक्षिप्त करने के लिए नियुक्त कक्षा सदस्य को कहें ।

समझाएं कि एल्लियाह ने पौरोहित्य कुंजियों को वापस और पुनःस्थापित कर दिया है जो परिवारों को अनन्तता के लिए एक साथ मुहरबंद करती हैं ।

कक्षा के सदस्य सिद्धान्त और अनुबंध ११०:१३–१६ की समीक्षा करें । कक्षा के एक सदस्य को निम्नलिखित बयान पढ़ने के लिए कहें, जो *पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना* में पृष्ठ २८ पर दिया गया है :

उसी ही दिन, अप्रैल ३, १८३६ से, बच्चों के मन अपने पिताओं की ओर फिरने लगे। उसके बाद से धर्मविधियां अस्थायी नहीं रही, बल्कि स्थायी हो हो गई हैं । मुहरबंद की शक्ति हमारे साथ थी । गरिमा में कोई प्राधिकार इससे बढ़कर नहीं । वह शक्ति उचित अधिकार के साथ किये गई दोनों जीवित और मृत्यु के लिए सारी धर्मविथियों के लिए एक अर्थ और अनन्त स्थिरता देती है ।

उद्धारकर्ता ने मुहरबंद शक्ति की व्याख्या की थी जब वह अपने प्रेरित पतरस से बोला था, जैसा कि मत्ती १६:१९ में अंकित है । कक्षा के सदस्य इस आयत को पढ़ें ।

समझाएं कि ये कुंजियां आज भविष्यवक्ता और गिरजाघर के अध्यक्ष के पास होती हैं । ''वह पवित्र मुहरबंद शक्ति अभी गिरजाघर के साथ है । उन लोगों के द्वारा जो इस अधिकार के महत्व को जानते हैं कुछ भी इससे ज्यादा पवित्र नहीं है । कुछ भी इतना नजदीकी से नहीं रखा जाता । अपेक्षाकृत कुछ पुरुष हैं जो किसी भी दिए गए समय में पृथ्वी पर इस मुहरबंद शक्ति को रखते हैं—प्रत्येक मन्दिर में बन्धु जिनको मुहरबंद शक्ति प्रदान की गई है । कोई भी इसे अन्य कहीं नहीं पा सकता सिवाय भविष्यवक्ता, दिव्यदर्शी, प्रकटकर्ता और अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर के अध्यक्ष से या उनसे जिनको उसने अन्यों को देने के लिए सौंपी है'' (*पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना,* २४, २६) ।

समझाएं कि मुहरबंद धर्मविधियां पति और पत्नी का एक दुसरे से मुहरबंदी और माता-पिता का अपने बच्चों के साथ मुहरबंदी सम्मलित है । जब माता-पिता मन्दिर में मुहरबंद हो जाते हैं, उन्हें पैदा हुए बच्चें अपने माता-पिता की मुहरबंदी के अनुबंध में पैदा होते हैं और अपने माता-पिता के साथ मुहरबंद होने की ज़रूरत नहीं है ।

• आपके विचार से कैसे मन्दिर में एक साथ मुहरबंद होना एक परिवार के प्रतिदिन के विचारों और कार्यों पर असर डालता है ?

• आपके विचार से एक परिवार में उनकी मन्दिर मुहरबंदी के कारण कौन सी आशीषें आएंगी ?

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा था : ''क्या कोई पुरूष हुआ था जो वास्तव में एक स्त्री को प्रेम करता था, या एक स्त्री जो वास्तव में एक पुरूष से प्रेम करती थी, जिन्होंने कभी प्रार्थना नहीं की थी कि उनका रिश्ता मरने के बाद भी जारी रह सके ? क्या कोई बच्चा उन माता-पिता द्वारा दफनाया गया हो जो इस निश्चितता पर नहीं ठहरते कि उनके प्रिय आने वाले संसार में फिर से उनका होगा ? क्या कोई जो अनन्त जीवन में विश्वास करता है संदेह कर सकता है कि स्वर्ग का परमेश्वर अपने पुत्र और पुत्रियों को जीवन की अमूल्य विशेषता, प्रेम जो पारिवारिक रिश्तों में अपने अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति को पाता है देगा ? किसी कारण की ज़रूरत नहीं कि परिवार संबंध मरने के बाद भी जारी रहेगा । मानव मन इसकी कामना करता है, स्वर्ग के परमेश्वर ने एक रास्ता प्रकट किया है जिसके द्वारा यह निश्चित बनाया जा सके । प्रभु के घर की पवित्र धर्मविधियां इसे संभव बनाती हैं'' ("Why These Temples?" *Temples of The Church of Jesus Christ of Latter-day Saints,* ४) ।

मन्दिर हमें उनकी सेवा करने के अवसर देते हैं जो मर गये हैं

कक्षा के सदस्य ओबद्याह १:२१ पढ़ें ।

भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने समझाया था कि गिरजाघर के सदस्य सियोन पर्वत पर उद्धारकर्ता कैसे बन सकते हैं :

''लेकिन [सन्त] सियोन के पर्वत पर उद्धारकर्ता कैसे बनते हैं ? उनके मन्दिर बनाने के द्वारा, बपतिस्मा कुंड बनाने के द्वारा और आगे बढ़कर अपने सारे पुर्वजों की तरफ से जो मर चुके हैं सारी धर्मविधियों, बपतिस्मों, पुष्टीकरणों, धुलाइयों, अभिषेकों, नियुक्तियों और मुहरबंदी शक्ति को अपने सिर पर लेने के द्वारा, और उन्हें मुक्ति दिलाना ताकि वे प्रथम पुनरूत्थान में आयें और उनके साथ महिमा के सिहांसनों के लिए उत्कर्षित किये जायें; इस में ही कड़ी है जो पिताओं के बच्चों की ओर, और बच्चों के पिताओं की ओर हृदय को बांधती है, जो एल्लियाह के उद्देश्य को पूरा करता है'' (*History of the Church,* ६:१८४) ।

''यह मन्दिर में किये गये निर्धारित कार्य उसी अस्वार्थी भक्ति और बलिदान की आत्मा में आगे ले जाया जाना चाहिए जो स्वामी के जीवन विशिष्टता को दिखाता है'' (अध्यक्ष थोमस एस. मॉनसन) ।

समझाएं कि उद्धार की अपनी योजना के हिस्से के रूप में, हमारे स्वर्गीय पिता ने उन लोगों के लिए इन धर्मविधियों को प्राप्त करने का रास्ता तैयार किया है जो सुसमाचार की बचाने वाली धर्मविधियों के बिना मर गये थे । आत्मा दुनिया में लोगों के पास सुसमाचार सुनने का अवसर होता है । वे वहां इसे स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन वे सुसमाचार की धर्मविधियों को अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते । प्रभु ने हमें पवित्र मन्दिरों में उनके लिए इन धर्मविधियों को करने की आज्ञा दी है । हमें पारिवारिक इतिहास कार्य करने के लिए विशेष प्रयास करने चाहिए ताकि हम अपने स्वयं के पूर्वजों की तरफ से धर्मविधियों को प्राप्त कर सकें ।

मन्दिरों में मृतकों के लिए संपन्न किये जाने वाली धर्मविधियों में शामिल हैं बपतिस्मा, पुष्टीकरण, पौरोहित्य के लिए नियुक्तियां, इन्डोवमेन्ट, और पति और पत्नी और माता-पिता और बच्चों की मुहरबंदीयां ।

जैसे हमारी परिस्थितियां अनुमति दें हमें प्रायः मन्दिर वापस जाना चाहिए ताकि उनकी जो मर गये हैं उनके लिए धर्मविधियों को संपन्न करने के द्वारा सेवा कर सकें । हम उनके जीवन के साथ-साथ जिनकी हम सेवा करते हैं अपने स्वयं के जीवन को भी आशीषित

करेंगे । पारिवारिक इतिहास कार्य और अपने पूर्वजों के लिए धर्मविधियां कैसे करें के बारे में जानकारी *मन्दिर और पारिवारिक इतिहास कार्य की ओर एक सदस्य की गाइड* (३४६९७) में उपलब्ध है ।

अध्यक्ष थोमस एस. मॉनसन ने कहा था :

''मन्दिर इन्डोवमेन्ट और मुहरबंदी धर्मविधियों के लिए एक सराहना हमारे परिवारों के सदस्यों को एक साथ नज़दीक लाएगा और प्रत्येक परिवार के सदस्य में इन्हीं समान आशीषों को हमारे प्रियों के लिए जो मर चुके हैं उपलब्ध कराने की एक इच्छा होगी....

''यह मन्दिर में किये गये निर्धारित कार्य उसी अस्वार्थी भक्ति और बलिदान की आत्मा में आगे ले जाया जाना चाहिए जो स्वामी के जीवन विशिष्टता को दिखाता है । जब हम उसे याद करते हैं, इस महत्वपूर्ण कार्य में हमारी व्यक्तिगत भूमिकाओं को करना हमारे लिए आसान बन जाता है । हर समय जब हम इन पवित्र घरों में से किसी एक पर टकटकी लगाये रखते हैं, हमें अनन्त अवसरों की याद दिलाये जो अन्दर हैं, न ही सिर्फ हमारे अपने लिए, बल्कि हमारे मृतकों के लिए'' (*Pathways to Perfection,* २०६...७)।

निष्कर्ष

जोर दें कि मन्दिर उपस्थिति हमें दूसरों की सेवा करने और आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर देती है । निम्नलिखित बयान को बांटें :

''कोई भी कार्य गिरजाघर के लिये मन्दिर कार्य और वंशावली खोज से अधिक सुरक्षित नहीं है जो इसे समर्थन करता है । कोई भी कार्य इतना आत्मिक शुद्ध करने वाला नहीं है । कोई भी कार्य जो हम करते हैं हमें इतनी शक्ति प्रदान नहीं करता । कोई भी कार्य में नेकता के इतने उच्च आदर्श की ज़रूरत नहीं होती है ।

''यदि हम मन्दिर धर्मविधि कार्य के बारे में प्रकटीकरण स्वीकार करेंगे, यदि हम अपने अनुबंधों को बिना किसी आरक्षण या बहाने के बनाएंगे, प्रभु हमारी सुरक्षा करेगा। हम जीवन की चुनौतियों के लिए पर्याप्त प्रकटीकरण प्राप्त करेंगे...

''तो मन्दिर आओ—आओ और अपनी आशीषों को पाओ । यह एक पवित्र कार्य है'' (*पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिए तैयारी करना,* ३७) ।

गवाहियां बांटने के साथ पाठ को समाप्त करें । कक्षा के सदस्यों को मन्दिर प्रायः वापस आने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि उन्हें प्रभु की आत्मा द्वारा शिक्षा दी जा सके ।

आप शायद जिक्र करना चाहे कि कक्षा के सदस्य गिरजाघर वितरण केन्द्र से विडियो प्रस्तुतिकरण *Mountain of the Lord* (53300) लेकर कर घर में देख सकते हैं । यह ७३-मिनट का प्रस्तुतिकरण साल्ट लेक मन्दिर बनने की कहानी को बताता है ।

किसी को समापन प्रार्थना करने के लिए अमन्त्रित करें ।

THE CHURCH OF
JESUS CHRIST
OF LATTER-DAY SAINTS

HINDI
4 02368 54294 7
36854 294